ISSN 2320-2858 UGC Journal No. 42684 अक्टूबर 2022
वर्ष - 10 अंक - 119

उत्तर प्रदेश ब्रज तीर्थ विकास परिषद

ब्रज लोक संपदा

सौजन्य : उ.प्र. ब्रज तीर्थ विकास परिषद, मथुरा

सांझी विशेषांक

NK Group

www.nkgroup.net.in

Rera Registration No.: UPRERAPRJ9769

वृन्दापुरम

उ.प्र. सरकार की अफोर्डेबल आवास नीति के अन्तर्गत
(एक सम्पूर्ण आवासीय योजना)

MVDA APPROVED

LOAN FACILITY AVAILABLE

State Bank of India

ICICI Bank

उच्च गुणवत्तायुक्त मकान प्राप्त करने का सुअवसर

निकट जी.एल.ए. विश्वविद्यालय, एनएच-2, वृन्दावन (मथुरा)

License No. 4019/25.C/SAY/2015-16 Date 01/05/2015

राज्य सरकार अनुमोदन संख्या 307/आ.ब.-1/स.यो.-पंजीकरण/2016 लखनऊ

मानचित्र अनुमोदन २ ख्या 08/के/16-17/म.वृ.वि.प्रा./2016-17

मो.: +91-7599995000, 9837128001, 759995000

ब्रज लोक संपदा

साहित्य, कला, संस्कृति, मानविकी एवं समाज विज्ञान की अन्तर्राष्ट्रीय शोध पत्रिका

संपादक :

डॉ. उमेश चन्द्र शर्मा

ब्रज संस्कृति विशेषज्ञ

उ.प्र. ब्रज तीर्थ विकास परिषद, मथुरा

सह-संपादक :

चन्द्र प्रताप सिंह सिकरवार

समन्वयक:

गीता शोध संस्थान, वृन्दावन

सहयोग :

डॉ. रश्मि वर्मा

शोध समन्वयक:

गीता शोध संस्थान, वृन्दावन

टंकण एवं कला संयोजन :

दीपक शर्मा

ब्रज ग्राफिक्स

कार्यालय :

ब्रज लोक संपदा कार्यालय, 302, गुरुकुल रोड, वृन्दावन

मो. : 09410619265, 7017709490

Website : www.brajloksampada.com * E-mail : brajloksampada@gmail.com

स्वामी मुद्रक एवं प्रकाशक

डॉ. उमेश चन्द्र शर्मा द्वारा चौधरी प्रिंटिंग प्रेस, ब्रह्मकुण्ड, वृन्दावन, मथुरा से मुद्रित कराकर 302, गुरुकुल मार्ग, वृन्दावन (मथुरा) से प्रकाशित।

ब्रज लोक संपदा भारतीय संस्कृति के मासिक शोध-पत्र की पृष्ठभूमि में हमारा यह सद् प्रयास है कि भारत की क्षेत्रीय कला व साहित्य का प्रज्ञात कलेवर परिवेषण कर राष्ट्रीय भावात्मक एकता के सूत्र को परस्पर संस्कृति के आदान-प्रदान से पुष्ट करें; इसी से व्यक्ति का व्यक्तिवाद शिथिल होकर समन्वित भाव से लोक अस्मिता के रूप में विकासोन्मुख नव जीवन का स्वरूप ग्रहण करेगा।

आवेदन - पत्र

कृपया मैं ब्रजलोक संपदा पत्रिका का तीन वर्ष अथवा आजीवन सदस्य बनना चाहता/चाहती हूँ। सदस्यता शुल्क.....नकद/चैक/ड्राफ्ट नं.....दिनांक ....संलग्न है।

श्री/श्रीमती/.....

पिता/पति का नाम.....

जहाँ पत्रिका मंगाना चाहते हो वहाँ का पूरा पता .....

.....

पिन..... दूरभाष/मो०.....

हस्ताक्षर

(कृपया उक्त आवेदन पत्र को हाथ से लिखकर या टाईप कराकर भेज सकते हैं)

सदस्यता शुल्क

एक प्रति- 50/-, एकवर्षीय - 500/-

विशेष: अपना चैक/ड्राफ्ट: श्रीश्री नरहरि सेवा संस्थान के नाम से

302, गुरूकुल रोड, वृन्दावन, मथुरा, उ.प्र., पिन: 281121 पर भेजें।

बैंक का नाम - केनरा बैंक

शाखा - विद्यापीठ चौराहा, वृन्दावन

खाता संख्या - 2480101002061

आईएफसी कोड - CNRBN0002480

प्रकाशित आलेखों के विचारों से संपादक मण्डल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

शोध पत्रिका से सम्बन्धित सभी विवाद केवल मथुरा न्यायालय के अधीन होंगे।

सम्पादकीय

डॉ. उमेश चन्द्र शर्मा

गोकुल और महावन की वात्सल्यमयी जगती पर साँझी-अर्चना का संकल्प उ.प्र. ब्रज तीर्थ विकास परिषद एवं जी.एल.ए. विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में अष्ट दिवसीय साँझी महोत्सव के रूप में सम्पन्न हुआ।

इस आयोजन की सहयोगी संस्था राजकीय संग्रहालय मथुरा द्वारा रीति रिवाज और परम्परा पर आधारित छाया चित्रों की प्रदर्शनी थी तो ब्रज संस्कृति शोध संस्थान वृन्दावन द्वारा सांझी संयोजन का मार्गदर्शन कला-कौशल की अनौखी अनुकृति थी।

कृष्ण भक्त रसखान व ताज बीबी उपवन की नयनाभिराम हरितिमा में जहाँ साँझी के विविध रूपों का दर्शन नित्य नवीनता के साथ दर्शकों को लुभाता रहा। किसी किसी अंकित छवि को तो भक्तवृन्द देखते ही रह जाते थे।

मुक्ताकाशी मंच की सुरम्य रंग भूमि पर जब ब्रज भाव-भरित ब्रजभाषा के काव्य माधुर्य में पगी सांस्कृतिक सरस प्रस्तुतियाँ हुई तो वे मंत्रमुग्ध किये बिना न रह सकीं, कला-साधकों की तन्मयता देखने योग्य थी, यह शायद स्थान का प्रभाव कहा जाये तो अतिशय न होगा, क्योंकि रसखान और ताजबीबी का कृष्ण प्रेम अपूर्व था; वहाँ तक शब्दों की पकड़ नहीं है।

प्रत्येक कृष्ण भक्त की अभिलाषा यही होती है कि मुझे आपके नित्य परिकर में स्थान मिले अर्थात् निकुंजवास हो। मेरी हिय-तराजू यह कहने में किंचित भी द्विविधा नहीं कर रही है कि इन दोनों ही भक्तों को यहाँ प्रत्यक्ष उपवन में निकुंजवास ही मिला है। रसखान का यह दोहा उनकी इसी आकाँक्षा को व्यक्त कर रहा है-

राधा माधव संखिन संग, बिहरत कुंज कुटीर।
रसिक राज रसखानि तहँ, कूंजत कोइल कीर॥

अनुक्रमणिका

1.	साँझी लीला (पद)	07
2.	साँझी (लोक कला व परम्परा) – *कपिल उपाध्याय*	08
3.	साँझी (ब्रज का कला गौरव) – *लक्ष्मीनारायण तिवारी*	15
4.	ब्रज की साँझी कला – *डॉ. नटवर नागर*	17
5.	साँझी भली बनि आई – *गोपाल शरण शर्मा*	19
6.	लोककला एवं आस्था का प्रतीक है साँझी – *डॉ. सीमा मोरवाल*	21
7.	साँझी की सांस्कृतिक परम्परा – *डॉ. उमेश चन्द्र शर्मा*	26
8.	साँझी कलाकारों का परिचय	34
9.	साँझी नाम सहेली कौ है – *राधा गोविन्द पाठक*	36
10.	साँझी लीला (मुक्तक)	37
11.	साँझी महोत्सव – *चन्द्र प्रताप सिंह सिकरवार*	38
12.	उ.प्र. ब्रज तीर्थ विकास परिषद एवं उ.प्र. पर्यटन विभाग द्वारा ब्रज में कराये गये कार्य – *डी.के. शर्मा (पर्यटक अधिकारी, मथुरा)*	45

साँझी लीला (पद)

आयौ सांझी कौं त्यौहार।
ब्रज वीथिन में धूम मचावत, ब्रजबालक नर नार।
सखिन संग श्रीललित किशोरी, करि सोलह सिंगार।
चुन चुन लावत कुंज कलिन कूं, फूलन पात उतार।
रंग अबीरन चौक पुरावत, बीथिन सहज बुहार।
गौ गोबर कूं लीप बनावत, सांझी निज निज द्वार।
पावन गौधूली बेला में लौटत जब सुकुमार।
'तेज' निहारत रास रसिक रस, नैनन की मनुहार।
पितर पच्छ उत्सव ब्रज भू पै, लखियों दृगन पसार।
श्यामाश्याम रचित रसलीला, भव सौं लेय उबार॥

सांझी श्यामा सरस सजाई।
अष्ट सखिन सह चौक पुरावत, छवि सबके मनभाई।
गोप ग्वाल गउ बछरन लैकैं, गिरि पै गये कन्हाई।
गोधूली तक करि गौचारन, हिलिमिलि गाय चराई।
षटरितु जमना पुलिन सुहावत, शोभा निज बिखराई।
शीतल मंद सुगंध सुहावति, चलत सरस पुरवाई।
आठहुं सिद्धि नवों निधि ब्रज में, संपति रहे लुटाई।
षटरस बिंजन त्याग श्याम नें, माखन मिसरी खाई।
बाल गुपाल निहार 'तेज' शुचि, दृष्टि सृष्टि हरषाई।

साँझी

(लोक कला व परम्परा)

कपिल देव उपाध्याय

मानव सभ्यता, लोक कला व परम्परा एक दूसरे के पूरक हैं, आप लोक कला, संस्कृति के बिना मानव सभ्यता के विकास की परिकल्पना भी नहीं कर सकते। भारत की मानव सभ्यता व विकास विश्व की प्राचीन सभ्यताओं में अग्रणीय है। अत: भारतवर्ष सहित विश्व की अनेक सभ्यताएँ लोक कला व परम्परा से समृद्ध रही हैं। जिनमें से ग्रीक, यूनान, नीलनदी, सीरिया, मेसापोटेनिया आदि महान सभ्यताएं अपनी लोक कला व परम्पराओं के कारण जीवित रही। साँझी लोक कला भारतवर्ष की प्राचीन सभ्यता को जीवंत रखने के कारणों में से एक है।

साँझी-सांझ-संध्याकाल का अपभ्रंश है। यह भारतवर्ष के विभिन्न प्रान्तों में पृथक-पृथक नाम से पुकारी जाती है। कहीं संझया माई, संझा देवी, सांजी, सांजया, सांजुली, सांझलदे, हंज्या, हांझी व झांझी नाम से पुकारते हैं। हड़प्पा सभ्यता में भी इस प्रकार के लोककला व मिट्टी के बने रेखाचित्र प्राप्त होते हैं, वैदिक काल में

भी साँझी का विवरण मिलता है। क्षेत्रानुसार पृथक-पृथक इस कला के इष्ट का चित्रण किया जाता है। यह मुख्यत: मातृशक्ति की पूजा का प्रतीक है प्राचीन काल में ब्रह्मा के मानस पुत्र श्री पीललम ऋषि की पत्नि सध्या या सांझी थी, जिसे मातृदेवी की मान्यता प्राप्त हुई।

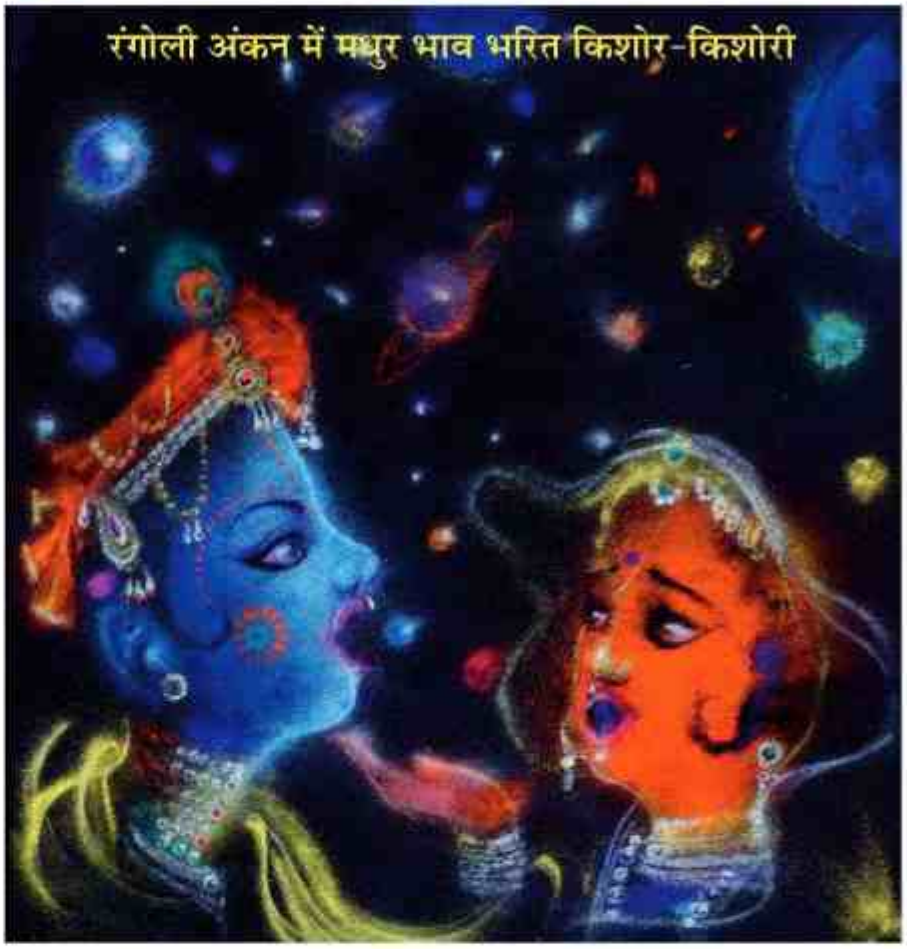
रंगोली अंकन में मधुर भाव भरित किशोर-किशोरी

ब्रजक्षेत्र के अधिकतर हिस्से में माता पार्वती को साँझी की अधिष्ठात्री देवी स्वीकार करते हैं, इसीलिए छोटी उम्र की कुवारी कन्याऐं अच्छे वर प्राप्ती को अपने अपने गाँव के मौहल्ले में साँझी (साथ में) पूजा करती हैं, इससे सांझी (संयुक्त) उत्सव नाम हुआ।

पौराणिक काल में संध्या भगवान सूर्य नारायण की पत्नि थी, इसलिए सांय प्रदोषकाल में सूर्य के उपासक सांझी की उपासना करते हैं। संध्या देवताओं के वास्तुकार विश्वकर्मा की पुत्री थी। सूर्य नारायण भगवान कश्यप ऋषि के पुत्र थे। अत: अनादि काल से कुवारी कन्याओं द्वारा संध्या में सांझी की पूजा की जाती है।

महाकाव्यकाल में सम्पूर्ण विश्व की सभी सभ्यताओं में महिम नाम की देवी की पूजा प्राप्त होती है एवं प्राचीन काल में जापान में सूर्य नारायण को देवी मान कर पूजा की जाती थी एवं ग्रीक में जीयस जो कि बिजली व आकाश का देवता था, पूजा करते थे। डेटियस ग्रीकराजा अपने को देव पुत्र, सूर्यपुत्र कहता था।

अत: ईसा पूर्व 180 वर्ष इन्डो ग्रीक राजाओं के प्रभुत्व वाले स्थानों पर सांझी का प्रचलन अधिक हुआ। अन्य सभ्यताओं में भी सूर्य पूजा के प्रमाण प्राप्त होते हैं।

सांझी का उत्सव : भाद्रपक्ष की पूर्णिमा से लेकर अमावस्या तक किशोर वय कन्याऐं उत्साह के साथ मनाती हैं। प्रतिदिन सांयकाल मिट्टी व गोवर की मातृ शक्ति की प्रतिमाओं का निर्माण करते हैं। उन्हें कांच के टुकड़े, फूल, चमकीले कागज, कौड़ी आदि से सजाती है, प्रदोषकाल में सभी कन्याऐं एकत्रित होकर अपनी क्षेत्रीय परम्परा के अनुसार गीत गाती हैं एक दीप जलाती है, आरती करती हैं व अलग अलग दिन अलग अलग

नियत पकवान या मिठाई का भोग लगाती हैं, सभी का मनोरथ सांझी देवी से परिवार की कुशलता एवं सदस्यों की बढ़ोत्तरी की प्रार्थना भाई भतीजों के लिए करती हैं। यह कार्यक्रम कथानक के अनुसार मिट्टी, गोबर से सांझी निर्मित होती है। कन्याऐं अपनी प्रतिभा द्वारा निर्मित सांझी से सभी वयस्कों को चमत्कृत कर देती हैं, जैसे सूर्योदय-सूर्यास्त का दृश्य, श्रृंगार सांझी के गहने आदि से सजाकर वयस्क कुशल कल्पना कार को भी मात दे देती है। सांझी प्रतिदिन सांयकाल नवीन बनायी जाती है। पुरानी प्रतिदिन हटा दी जाती है देश के प्रत्येक आंचल में साँझी की लोक कथा अलग-अलग वर्णित है। ब्रज के आंचल में सबकी प्रिय बेटी (वीरन बेटी) भाई के साथ मायके आती है, वह कुछ दिन मायके में रहने के उपरान्त पति विरह में व्याकुल हो जाती है, फिर उत्सुकता के साथ अपने पति की बाट जोहती है एवं सांझी की पूजा करना शुरू करती हैं। इसी कथानक को ब्रज में क्वाँरी (अविवाहित) कन्या गोबर मिट्टी से चित्रण करती हैं जैसे प्रथम दिन गोबर के पांच थापे व स्वास्तिक चिन्ह बनाती हैं जो कि बेटी के स्वागत का प्रतीक हैं, दूसरे दिन एक तिवारी व पशु की आकृति बनाती है, तीसरे दिन दो तिवारी पक्षी का चित्रण व चौथे दिन तीन तिवारी के साथ सांझी की आकृति, पांचवे दिन सांझी के लिए चार तिवारी क्यों कि सांझी के लिए ठहरने की व्यवस्था की जाती है साथ में पक्षी जो कि व्याकुलता का प्रतीक है। छठे दिन सांझी के निकट पंखा व पान सुपारी रखी जाती हैं जो कि सत्कार का प्रतीक है सातवें दिन सांझी मनोरंजन के लिए चौपड़ बनायी जाती है। आठवें दिन स्वास्तिक का पुन: निर्माण यह पति के लिए स्वागत नौंवे दिन फूल व चौपड़ दसवें दिन नाव नौका विहार हेतु तथा ग्यारहवें दिन दस पान बनाये जाते हैं। बारहवें दिन 21 सिंगाड़े बनाकर सांझी के व्रत की सामग्री बनाई जाती है। तेरहवें दिन ओढ़नी फरिया सांझी को उढ़ाई जाती है। चौदहवें दिन नसैनी, खजूर का पेड़ बनाया जाता है जिस पर सांझी को बैठा दिखाया जाता है। यह सांझी के विरह को दर्शाता है। जिसमें ऊपर सांझी बैठी

गोबर की सांझी में अंकित गोवर्धनधारी

दर्शायी जाती है। पन्द्रहवें दिन एक पांव का ब्राह्मण व कौआ सांझी के पास दूत के रूप में बनाया जाता है। सोलहवें दिन पति से मिलन के लिए कोट बनाया जाता है। जिसमें हीर रांझा, स्वास्तिक, सूर्य, चन्द्रमा, तारे, वृक्ष, पशु-पक्षी आदि बनाये जाते हैं। कोट की सजावट में कांच के टुकडे, कौड़ी, कपडे, रंगों का इस्तेमाल, गहने मिट्टी के बनाकर सजाया जाता हैं, यह कला अदभुत लोक कला है जिसमें कि हडप्पा में इस प्रकार ही प्राप्त हुई है। इसमें गुजरिया, ब्राह्मण, क्षत्रीय, सेवक, हाथिया आदि बनाये जाते हैं।

प्रेम मग्न राधिका रमन

ग्वालियर, मध्य प्रदेश बुन्देलखण्ड अंचल में कथानक के अनुसार जंगल में तालाब के किनारे एक राक्षस रहता था, गराडि ब्राह्मण की कन्या पर मोहित हो गया, वह ब्राह्मण अपने परिवार से दूर देश में अज्ञात वास में था। राक्षस उस ब्राह्मण के पास गया उसने उसकी कन्या से शादी का प्रस्ताव रखा लेकिन ब्राह्मण भय से मना न कर सका परन्तु टालने के उद्देश्य से कहा, अभी तो मेरी बेटी सोलह दिन गोबर के चौक रखकर व्रत अनुष्ठान कर खोलेगी। उसके बाद शादी की बात करूंगा, राक्षस मान गया वह लौट गया। ब्राह्मण ने अपने परिवार के सभी सदस्यों को अपने देश में सूचना प्रेषित की, परन्तु सोलह दिन बाद वह पुन: आया लेकिन ब्राह्मण की सहायता के लिए उसके कुटुम्ब से कोई नहीं आया फिर पुन: नम्रता पूर्वक राक्षस से आग्रह किया अभी मेरी बेटी सोहड (नव दुर्गा पूजन) की पूजा नौ दिन और करेगी उसके बाद शादी पर विचार करूंगा। राक्षस पुन: लौट गया परन्तु ब्राह्मण के कुटुम्ब से कोई सहायता नहीं आयी। नौ दिन भी व्यतीत हो गये, राक्षस के आने पर पुन: ब्राह्मण ने कहा मेरी बेटी जप, पूजा नियम के आधीन पुन: पाँच दिन भिक्षावृत्ति करेगी। पांच दिन बाद राक्षस आया उसने दबाब से आग्रह किया। ब्राहाण बेटी की शादी करने को तैयार हो गया। शरद पूर्णिमा को शादी का आयोजन हुआ, साढ़े तीन फेरे शादी के लग चुके थे। ब्राह्मण का कुटुम्ब आ गया। उसने राक्षस को मार दिया एवं उस बेटी को भी मार दिया क्योंकि बेटी को परिवार के कलंक के लिए उत्तरदायी माना। कुटुम्बीजनों ने ब्राह्मण को भी मार दिया क्योंकि वह बिना सूचना के चुपचाप कुटुम्ब छोड़ दूसरे इलाके में आया था। ब्राह्मण कन्या को

साँझी मानते हैं, राक्षस को टेसू, सोहड को ब्राह्मण मानते हैं। कन्याए व लड़के साँझी व टेसू लेकर दीपक जला कर दशहरा से पूर्णिमा तक घर-घर जा कर पैसे मांगते हैं।

एक कथानक मध्य प्रदेश के दूसरे आंचल में प्रसिद्ध है। जिसमें ऐसा मानते हैं बब्रुवाहन अर्जुन व नाग कन्या से उत्पन्न पुत्र था, वह अत्यन्त बलशाली था, उसका नियम था युद्ध में हारने वाले की सहायता करता था परन्तु अजेय था जब महाभारत के वीर इकट्ठे हो रहे थे जब कृष्ण ने उससे पूछा किस ओर हो तब उसने कहा मैं हारने वाले की ओर से युद्ध करूंगा। तब कृष्ण चिंतित हो गये, अर्जुन युधिष्ठर आदि से कृष्ण ने कहा महाराज इस युद्ध के लिए, मेरी, अर्जुन व बब्रुवाहन में से किसी एक की बलि जीत के लिए आवश्यक है तब कृष्ण के सम्मान के लिए बब्रुवाहन बलि के लिए सहर्ष तैयार हो गया। उसने प्रार्थना की मैं युद्ध देखना चाहता हूं तब उसका सिर काट कर शमी के वृक्ष पर रख दिया, परन्तु युद्ध के समय युद्ध वीरों के युद्ध कौशल को देखकर हंसता, कई-कई योजन सेनाएं पीछे हट जाती तब कृष्ण ने उसका मुख दूसरी ओर करके तीन भालों की नोक पर टिका दिया फिर भी वह उत्पात करता रहा उसके व्यवहार से उत्पीड़ित होकर सांझी के साथ विवाह कृष्ण ने करा दिया। बब्रुवाहन के सिर भाले पर टिका हुआ ही टेसू है। कन्याऐं हाँडी में छेद कर दीपक जला कर जगह जगह पैसे मांगती है यह साँझी या झांझी है।

साँझी अंकन में मुरली मधुर बजाई श्याम

सांझी पूजा से एक मिथक भी लोक परम्परा से जुड़ा हुआ है। सोलह दिन सांझी पूजा कर उसे मिट्टी की हांडी में रख कर कन्याऐं पन्द्रह दिन बाद किसी तालाब में जाकर डुबोती हैं। यह हांडी रातों में फूटनी नहीं चाहिए, तालाब में भी तैर कर दूसरे किनारे पर नहीं पहुंचनी चाहिए। यदि पहुंचती है तो परिवार व गांव में दुर्योग, दुर्भिक्ष, महामारी का सामना करता है, अत: कन्याऐं बड़े यत्न से रास्ते में शैतान लड़कों से हांडी की सुरक्षा करते हुए ले जा कर के तालाब में छोड़ने पर ग्राम वासी उसे डूबो देते हैं।

ब्रज की मन्दिर परम्परा में: साँझी की लोक कला परम्परा को मध्यकाल में ब्रज में द्वैत वादी सन्तों ने अपना कर भक्ति आन्दोलन में एक नया रूप प्रदान किया द्वैत की परम्परा में रामानुज, निम्बार्क, विष्णुस्वामी, माध्वगौड़ीय सम्प्रदाय ने ब्राह्मा की मानस पुत्री संध्या को सूर्य की पत्नि स्वीकार कर इसकी पूजा को सोलह दिन श्राद्धपक्ष में राधाजी की पूजा से जोड़ दिया क्योंकि राधाजी सूर्य वंशी वृषभानु की पुत्री थीं, सूर्य उनके पूर्वज थे। इस ब्रज में रामानुज सम्प्रदाय व दक्षिण भारत में रंगोली के रूप में स्वीकार किया परन्तु अन्य सम्प्रदाय के आचार्यों ने मिट्टी से ज्यामितीय बेस बना कर (जैसे अष्टभुजा, चतुर्भुज, त्रिकोण, पंचभुज, षठभुज) मध्य में राधा

कृष्ण की लीलाओं का अंकन किया। कलात्मक रूप से चारों ओर बेल बूटा बनाए गये, विभिन्न प्रकार के रंगों का उपयोग किया। पहले केवल विशुद्ध प्राकृतिक रंग उपयोग में लाये जाते थे परन्तु बाद में कृत्रिम रंग भी उपयोग में आने लगे साथ ही वल्लभ कुल में केले के तने से साँझी की झांकी भी बनने लगी। इनमें रंगों के साथ रंगीन चमकने वाले कागज भी उपयोग होने लगे।

साँझी का नियम है- प्रत्येक दिन संध्या के समय आरती के उपरान्त भोग लगाकर शयन आरती के उपरान्त रात्री में मिटा दी जाती है अगले दिन पुनः नवीन साँझी का निर्माण होता है। इस साँझी कला ने ब्रज में महत्वपूर्ण लोक कला का स्थान ले लिया। समय के साथ यह कला साँझी का खेल अति महंगा होने के कारण मन्दिरों से विलुप्त होने लगा। अब तो केवल कुछ मन्दिरों में ही साँझी श्राद्धपक्ष में मनायी जाती है। जैसे द्वारिकाधीश, बरसाना में श्रीजी महल, गोकुल में गोकुल नाथ जी, वृन्दावन में गदाधर भट्ट जी की समाधि मदन मोहनजी, राधावल्लभ मन्दिर, शाहजहांपुर मन्दिर, राधारमण मन्दिर में कभी मन्दिर के सामने डोल पर भी साँझी की कला-फूल, रंग, गोबर से बनायी जाती व प्रसिद्ध थी, अब यह परम्परा लुप्त होने को है।

मनवांछित फल पाइये जो यह नित्य सेव।
अहो बृषभानु की लाड़ली यह साँझी साँचो देव॥

लोक परम्परा में साँझी के गीत सम्पूर्ण देश में विभिन्न भाषाओं के प्रचलित व लोकप्रिय हैं, जिसमें परिवार की समृद्धि सदस्यों की कुशलता, सम्पन्नता, वंश बढोत्तरी की मनोकामना है।

मन्दिर की परम्परा में साँझी उत्सव के पद कवियों (वाणीकारों) ने बहुतायत से लिखे, मन्दिर में गर्भगृह के सन्मुख तिवारी आंगन या बरामदे में साँझी बनायी जाती है व साँझी के सन्मुख परम्परा के अनुसार समाज गायन होता है। निम्नलिखित पदों में राधा जी ने कालीदास के मेघदूत व रूप गोस्वामी के हंसदूत के सामान सूवटा व कीर (तोता) पक्षी को दूत बना कर विरह का सन्देश श्रीकृष्ण को भेजती हैं।

हरि वरन कौ सूवटा मिठ बोला हो।
करि मेरो इक काज कीर मिठ बोला हो॥
साथिन मेरी सामरी मिठ बोला हो।
सो कित बीरमी काज कीर मिठ बोला हो॥
तू उड़ बाके नगर जाहि मिठ बोला हो।
कहियौ बचन सुनाय कीर मिठ बोला हो॥
सुघर सिरोमनि वह सखि मिठ बोला हो।
ल्याऔ संग लगाय कीर मिठ बोला हो॥
गिरी पर ऊँचौ गामरौ मिठ बोला हो।
ताहि के मधि बास कर कीर मिठ बोला हो॥
तू लै आओ मनाय कें मिठ बोला हो।

एकात्म भाव धारा में निमग्न युगल स्वरुप
साँझी अंकन की अनुपम छवि

जो वह होय उदास कीर मिठ बोला हो॥
खोज लीजिये गेह कीर मिठ बोला हो।
बरसाने पग धारिये मिठ बोला हो॥
साँझी मानि सनेह कीर मिठ बोला हो।
वह भूखी है प्रीति की मिठ बोला हो॥
सुनति आई है दौरि कीर मिठ बोला हो।
साँझी सुहृदय सँभारि है मिठ बोला हो॥
बाबाजू की पौरि कीर मिठ बोला हो।
फूलन बीनन हौं गई जहां जमुना कूल द्रुमनि की भीर।
अरूझि गयौ अरनी की डरिया तिहि छिन मेरो अंचल चीर॥
तब कोऊ निकसि अचानक आयौ मालती सघन लता निर वारि।
बिन ही कहै मेरौ पट सुरझायौ इक टक मो तन रहयौ री निहारि॥
मन अरुझाय बसन सुरझायौ और कहाँ कहौ लाज की बात।
हौ सकुचन झुकी दवी जात इत उत वह नैनहि हा हा खात॥
नाम न जानौ स्याम अंग हौ पियरे बरन वाकौ हुतौ री दुकूल।
अब बा वन लै चालि नागरि फिर सांझी बीननिं कौ फूल॥

गोपी कहती हैं सखी मैं फूल बीनने के लिए जमुना किनारे कुंज में गयी वहां एक आफत आ गयी। मेरे फूलन की डरिया एवं मेरे आंचल की ओढ़नी वृक्ष में उलझ गयी तब एक अचानक ही मालती की लताओं से निकल कर आया उसने बिना मेरी स्वीकृति के मेरा वस्त्र सुलझा दिया एवं मुझे एक टक निहारता रहा उसने मेरा मन उलझाकर वस्त्र सुलझा दिया यह लाज की बात कैसे वर्णन करूँ? मैं संकोच व लाज में दबी हुई जा रही थी वह उन नयनों से बार बार प्रणय निवेदन कर रहा था। मैं उसका नाम नहीं जानती वह श्याम रंग व पीले वस्त्र पहने हुए था एवं बांके टेढ़ी नजर वाला मनोहर छवि का स्वामी था । अरी सखी मुझे उसी वन में फिर सांझी पूजन के लिए फूल बीनने के हेतु लेकर चल ।

★★★

साँझी

ब्रज का कला गौरव

लक्ष्मी नारायण तिवारी

साँझी एक लोक पर्व है। यह मूलत: संध्या की उपासना का लोकानुष्ठान है, जो प्राय: पूरे उत्तर भारत में पितृपक्ष के दौरान शाम के समय कुँवारी कन्याओं के द्वारा मनाया जाता है। इस के केंद्र में है लोकचित्रण, जिस में पूरे पितृपक्ष भर भित्ति पर गाय के गोबर व मिट्टी आदि से प्रत्येक दिन नई आकृतियाँ बनाई जातीं हैं।

लेकिन ब्रज की देवालय संस्कृति में साँझी का नवाचार हुआ है। वह यहाँ श्री राधिकाजी की साँझी के रूप में प्रतिष्ठापित है, जो गोबर से नहीं, बल्कि पुष्पों और रंगों से बनाई जाती है। साँझी ब्रज-वृंदावन के देवालयों में एक कला परम्परा के रूप में विकसित हुई है। जिसे आज हम पुष्प साँझी, रंग साँझी और जल साँझी के रूप में देख सकते हैं।

मटकी फोड़ लीला का अंकन दृश्य

भाव लोक की साधना में मटकी फोड लीला का चित्राकंन

ब्रज की देवालयी रंग साँझी में मिट्टी की एक अठ पहलू वेदी पर बेलों की जटिल ज्यामिति आकृतियों का निर्माण किया जाता है, जिनमें खाकों के माध्यम से सूखे रंगों का संयोजन किया जाता है। इस के केंद्र में होता है श्रीराधाकृष्ण के लीला प्रसंगों का दिव्य चित्रण। इसी क्रम में प्रत्येक दिन नई आकृतियाँ जन्म लेतीं हैं,जो शाम के समय सामान्यजन के लिए कला का एक अद्भुत संसार और भक्त साधकों के लिए एक भाव लोक की रचना करतीं हैं।

सांझी के लोकगीतों की तरह महाकवि सूरदास, सूरदास मदनमोहन, गोस्वामी हरिराय, वल्लभ रसिक, हित रूपलाल गोस्वामी, चाचा हित वृन्दावनदास, कृष्णदास तथा गुण मंजरी आदि ब्रज के विभिन्न भक्त कवियों ने साँझी विषयक विपुल ब्रजभाषा काव्य रचा है। 18 वीं सदी में कृष्णगढ़ के महाराजा एवं भक्तवर नागरीदास और उनकी उपपत्नी बनीठनी जी ने तो रासलीला मंच के लिए 'साँझी फूल बीनन समय संवाद' लीला लिखी ही नहीं, बल्कि उसे मंचित भी कराया।

पुष्टि सम्प्रदाय, चैतन्य सम्प्रदाय, राधावल्लभ सम्प्रदाय, निम्बार्क सम्प्रदाय तथा ललित सम्प्रदाय में तो साँझी उपासना का अंग ही बन गई जिस से ब्रज-वृंदावन के साँझी कलाकारों, रासधारियों, गायकों तथा कवियों को अत्यन्त प्रोत्साहन प्राप्त हुआ। दरबारी चित्रकारों द्वारा भी नागरीदासजी के काव्य पर आधारित कृष्णगढ़ लघुचित्र शैली में 'साँझी लीला' विषयक चित्र बनाये गये।

मन्दिर साँझी भारतीय शिल्पकला परम्परा को ब्रज-वृन्दावन की सब से बड़ी देन है। यह ब्रज का कला गौरव है। ब्रज की विभिन्न वैष्णव सम्प्रदायों में उपासना भाव के अनुरूप ही साँझी की कलात्मक विविधताएँ देखते ही बनतीं हैं। जहाँ वृन्दावनी साँझी में निकुंज लीलाओं का विशेष चित्रांकन होता है, वहीं पुष्टि सम्प्रदाय के मन्दिरों में ब्रज लीलाओं और लीला स्थलों का चित्रण प्रमुखता से देखने को मिलता है। बरसाना स्थित श्रीजी के मन्दिर और ललित सम्प्रदाय के मन्दिरों की साँझी में लीला प्रसंगों का नहीं, केवल लीला स्थलों का ही चित्रांकन किया जाता है। परन्तु अत्यन्त श्रम साध्य होने के कारण आज यह परम्परा दम तोड़ रही है । मन्दिरों में साँझी बनाने वाले कलाकार निरन्तर कम हो रहे हैं। आज आवश्यकता है कि ब्रज की साँझी कला के समग्र संरक्षण हेतु एक ठोस परियोजना बने।

"नागरिया रस रगमगे दोउ कुसुम सेज कैं माँझ।
साँझी पूजत पिय मिलें परम सलौंनी साँझ॥"

ब्रज की साँझी कला

डॉ. नटवर नागर

मथुरा मण्डल में बालिकाओं द्वारा 'साँझी माता' के पूजन-अर्चन और आरती की लगभग छह सौ वर्ष पुरानी परम्परा मिलती है। सम्भवत: यह कोई लोकमातृका है। कुँवारी बालिकाओं के द्वारा इसका पूजन-अर्चन और आरती साँझ के समय ही होती है एतदर्थ इसका नाम 'साँझी' रखा गया प्रतीत होता है। आश्विन कृष्ण प्रतिपदा से अमावास्या तक, श्राद्ध-पक्ष में बालिकाऐं सुंदर-सुयोग्य पति प्राप्त करने की कामना से, गाय के पवित्र गोबर से साँझी बना कर 'साँझी माता' की पूजा करके भोग लगाती हैं और आरती करती हुई गाती हैं 'आरती री आरती साँझी माता आरती'। कुछ लोग साँझी शब्द का अर्थ मात्र साज-सज्जा से लेते हैं, उनसे हम सहमत नहीं हैं। हमें तो साँझी साँझ की कोई लोकमतृका ही प्रतीत होती है।

मथुरा मण्डल में साँझी कला की परम्परा को श्रीकृष्ण से जोड़ा गया है, यह स्वाभाविक भी है क्योंकि श्रीकृष्ण तो सभी कलाओं के अधिष्ठाता हैं। भक्ति काल के सूरदास आदि भक्त कवियों ने, अपने पदों में श्रीराधा तथा अन्य सखियों के साथ, श्रीकृष्ण के साँझी बनाने और पूजने का वर्णन किया है। मध्यकालीन भक्ति आन्दोलन के वल्लभाचार्य, हितहरिवंश आदि आचार्यों ने साँझी कला को अपनी भगवत्सेवा से जोड़ कर मंदिरों में प्रश्रय दिया और इन मंदिरों में सूखे रंगों की साँझी, फूलों की साँझी और पत्तों की साँझी बनने लगीं। औरंगजेब के समय में वल्लभाचार्य के वल्लभ सम्प्रदाय की निधियों के श्रीविग्रह जब राजस्थान के नाथद्वारा आदि स्थानों पर गये तो यह कला उनके साथ नाथद्वारा आदि राजस्थान के नगरों में पहुँची। वहाँ से जैसे-जैसे वल्लभ सम्प्रदाय ने देश-विदेश में अपने पैर

पसारे तो इस सम्प्रदाय की सेवा-प्रणाली के साथ-साथ यह कला भी देश-विदेश में पहुँची। आज भी जहाँ वल्लभ सम्प्रदाय की हवेलियाँ हैं, वहाँ हवेलियों में, श्राद्ध पक्ष में, पन्द्रह दिन साँझी बनती है और 'संजा आरती' तथा 'सयन' की झाँकी में साँझी के पद कीर्तन में गाये जाते हैं। यह बात अलग है कि प्रोत्साहन और रुचि के अभाव में अब यह परम्परा, प्रतीकात्मक ही रह गयी है। वृन्दावन (मथुरा) में भी मंदिरों से जुड़े होने के कारण ही अभी तक यह परम्परा बची हुई है और वहाँ मंदिरों में सूखे रंगों की साँझी आज भी बनाई जाती है।

लोक में चार प्रकार की साँझी बनाई जाती रही हैं। 1.गोबर की साँझी 2.सूखे रंगों की साँझी 3.फूलों की साँझी और 4.पत्तों की साँझी।

ऐसा प्रतीत होता है कि पहले फूलों की ही साँझी का प्रचलन था बाद में गोबर की साँझी बना कर बालिकाऐं पूजने लगीं होंगी। फूलों की साँझी फूल-पत्तों से बनाई जाती है और गोबर की साँझी गाय के गोबर से बना कर फूलों से सुसज्जित की जाती है। सूखे रंगों की साँझी सूखे रंगों के 'पाउडर' को कपड़े की पोटली द्वारा कागज के साँचों पर डाल कर बनाई जाती है। मथुरा मण्डल की साँझी में श्रीकृष्ण की लीलाऐं और लीला स्थलों के चित्रण की ही प्राचीन परम्परा थी, बाद में सूखे रंगों की साँझी के कलाकारों ने जनजीवन से सम्बन्धित चित्रण भी किए।

मंदिरों के अलावा पहले सूखे रंगों की साँझी कुछ कला प्रेमी कलाकारों द्वारा भी बनाई जाती थी। मथुरा में स्वामीघाट पर सुप्रसिद्ध 'जोशी बाबा की हवेली' में जोशी बाबा परिवार की साँझी बहुत प्रसिद्ध थी जिसे देख कर अंग्रेज अधिकारी भी दाँतों तले अँगुली दबालेते थे। मारूगली, मथुरा के चुन्नीलाल ज्योतिषी तथा बिहारी पुरा, मथुरा के नागर ब्राह्मणों की साँझी भी प्रसिद्ध थी। धीरे-धीरे लोक में से यह लोक कला लुप्त हो गयी अब मंदिरों में ही इसके अवशेष कहीं कहीं रह गये हैं।

साँझी भली बनि आई....

गोपाल शरण शर्मा

साँझ, दिवस के अवसान एवं रात्रि के प्रारंभ का सन्धिकाल है। कितना मनोहारी है यह समय जब भगवान भास्कर अपने समस्त तेज को समेट कर रात्रि की गोद में विश्राम का मन बना चुके हैं। रात्रि भी भगवान भुवनभास्कर को आलिंगन करने के लिए आतुर है, किन्तु यह निष्ठुर चन्द्र मिलन में अवरोध उत्पन्न कर रहा है। वक्रकाय है न, मन से भी वक्र है। कहीं प्रियतम नाराज न हो जाएं इसके लिए संझा को भेजा गया है उनका स्वागत करने के लिए।

सन्ध्या आत्मचिंतन का भी समय है। चिन्तन से पूर्व आराधन आवश्यक है। यह आराधन ही साँझी के रूप में व्यक्त है। भोर में ही नंदनंदन गौचारण के लिए वन में गए हैं। दिन भर वंशी में गाय को ही टेरते रहे। अब साँझ का समय है, गौखुरों की रज ने पूर्ण श्रृंगार कर दिया है श्यामसुंदर का। वनफूलों की माला गले में है और मस्तक पर सदैव की तरह मयूरपंख।

नेत्र अब प्रिया को तलाश रहे हैं। उधर प्रियाजी अपने प्यारे के लिए अपने हाथों से फूल चुनकर लायी हैं। अपने प्राणवल्लभ के लिए पुष्पों से कुछ अंकन करके उनके मनरंजन का कुछ जतन करने के लिए।

यहां से साँझी का उद्गम है। साँझी उपासना का एक अंग है। साँझी का भाव इतना सहज है कि एक साधारण भक्त उसे आसानी से समझ सकता है लेकिन वह इतना भाव प्रवण भी है कि एक रसोपासक को साधना के उच्च सोपान पर पहुंचा सकता है।

18 वीं सदी में कृष्णगढ़ के महाराजा एवं भक्तवर नागरीदास और उनकी उपपत्नी

बनीठनी जी ने तो रासलीला मंचन के लिए "साँझी फूल बीनन समय संवाद" लीला लिखी ही नहीं, बल्कि उसे मंचित भी कराया।

पुष्टि सम्प्रदाय, चैतन्य सम्प्रदाय, राधा-वल्लभ सम्प्रदाय, निम्बार्क सम्प्रदाय तथा ललित सम्प्रदाय में तो साँझी उपासना का अंग ही बन गई, जिससे ब्रज-वृंदावन के साँझी कलाकारों, रासधारियों, गायकों तथा कवियों को अत्यन्त प्रोत्साहन प्राप्त हुआ। दरबारी चित्रकारों द्वारा भी नागरीदासजी के काव्य पर आधारित कृष्णगढ़ लघुचित्र शैली में 'साँझी लीला' विषयक चित्र बनाये गये।

अश्विन मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी से अमावस्या तक वृन्दावन के प्रमुख मंदिरों में साँझी का निर्माण किया जाता है। यहां साँझी को ठाकुरजी की उपासना का अंग मान कर सेवा की जाती है। मन्दिर साँझी भारतीय शिल्पकला परम्परा को ब्रज -वृन्दावन की सब से बड़ी देन है। यह कला ब्रज का कला गौरव है, किन्तु अत्यन्त श्रम साध्य होने के कारण आज यह परम्परा दम तोड़ रही है। मन्दिरों में साँझी बनाने वाले कलाकार निरन्तर कम हो रहे हैं।

यहां वृन्दावनीय साँझी कला का अद्वितीय सौन्दर्य दर्शनीय है। यह कला केवल वृन्दावन में सिमट कर न रह जाये वरन् विश्व के कला मर्मज्ञों, रसिक भक्तों एवं साधारण जनों में भी प्रचारित हो इसके प्रयास किये जाने आवश्यक हैं। ऐसा ही सार्थक प्रयास उत्तर प्रदेश ब्रज तीर्थ विकास परिषद व जी.एल.ए विश्वविद्यालय के द्वारा महावन में स्थित ब्रज के महाकवि रसखान व ताजबीबी के उपवन पर अष्ट दिवसीय साँझी महोत्सव का आयोजन अनुकरणीय प्रयास था।

ब्रज संस्कृति शोध संस्थान, मन्दिर श्रीधाम गोदा विहार, वृन्दावन के द्वारा इस मेले में पूर्ण निष्ठा के साथ सहयोग किया गया। संस्थान के वरिष्ठ एवं उदीयमान कलाकारों द्वारा यहां लगातार आठ दिन साँझी का निर्माण किया गया जिसके अंतर्गत रंग की साँझी, फूलों की साँझी,जल के ऊपर व जल के नीचे की साँझी निर्मित की गई।

रंगोली के उदीयमान कलाकार कमलेश्वर शर्मा ने महाकवि रसखान व ताजबीबी के चित्रों को बनाकर कला की जीवंतता को प्रदर्शित किया।

मनवांछित फल पाइये जो कीजे इहै सेव।
सुनौ कुँवरि वृषभानु की यह साँझी सांचौ देव॥

लोककला एवं आस्था का प्रतीक है सांझी...

डॉ. सीमा मोरवाल

भारतीय जीवन के अनंत स्रोतों का मूल उद्गम लोक संस्कृति ही है संस्कृति शब्द बहुत ही व्यापक और गंभीर अर्थ का बोधक है मेरी समझ में सुधरे हुए हमारे संस्कारों और आचार विचारों का समुच्चय ही संस्कृति है भारतीय संस्कृति का संस्कार लोक संस्कृति द्वारा ही हुआ है यह लोक संस्कृति अपने प्राक्कतन रूप में आज भी हमारे गांव जंगलों और पर्वतों में प्रकृति की छाया में अपना अस्तित्व सुरक्षित रखे हुए हैं लोक संस्कृति की आत्मा गांवों तथा वन में रहने वाले लोगों के रीति-रिवाजों लोकगीतों और आचार विचार में निहित है अपने देश और संस्कृति की समृद्धि के लिए में लोक संस्कृति के संरक्षण का प्रयास अवश्य करना चाहिए यह ठीक है कि संस्कृति कभी मरती नहीं परंतु यह भी सत्य है कि समयानुसार संस्कृति में परिवर्तन तो हुआ ही करते हैं अत: परिवर्तनों की उस श्रृंखला में हमारी संस्कृति कहीं लुप्त ना हो जाए इसका प्रयास हमें सदैव करना चाहिए ब्रज की लोक संस्कृति रंग बिरंगी संस्कृति है यहां की संस्कृति का मूल है दूसरों के लिए जियो इसी भावना को समेटे हुए यहां की लोक कलाएं लोकगीत परिलक्षित होते हैं जिनमें आश्विन मास में मनाई जाने वाली सांझी लोक कला बहुत ही समृद्ध है तथा संपूर्ण परिवार के कल्याण की भावना को अपने अंदर समेटे हुए है। लोक कलाएं मानव जीवन की सहज अभिव्यक्ति है ब्रज में मनाए जाने वाली सांझी की यह अनुष्ठान एक पूजा अपने अंदर कला प्रेम कथा कल्याण की भावना को समाहित किए हुए हैं।

लोक लोककलाओं का एक ऐसा समागम है जिसमें लोककलाएं मोतियों की तरह बिखरी हुई पड़ी हैं। आवश्यकता है उनको संजोकर सही स्वरूप में प्रस्तुत करने की। अतीत के झरोखे से जब हम भारतीय लोककला के इतिहास में जाकर देखते हैं तो मालुम पड़ता है कि भारत भिन्न-भिन्न ऋतुओं का देश है। यहां पर अलग-अलग ऋतुओं में अलग-अलग उत्सव

मनाने की परम्परा रही है। संक्रमणकालीन ऋतुओं में आने की बदौलत हमारे तीज-त्यौहार सीधे रूप से हमारी भावनाओं से जुड़े हुए हैं। इन भावनाओं में चित्रण, लोककला, अलंकरण आदि सभी समाहित हैं। लोक-कलाएं हमारे जीवन को नई ऊंचाईयां प्रदान करने में निर्णायक भूमिका अदा करती हैं। भारत का प्रत्येक राज्य अपना-अपना आंचलिक सौरभ ओढ़े अपनी-अपनी भाषा के अक्षर रूपी मोती लुटाते, विभिन्न संस्कृतियों को झोली में छिपाए, हर प्रदेश अपने-अपने विशिष्ट रीति-रिवाजों एवं अनुष्ठानों के माध्यम से अपनी केसरिया सुगन्ध बिखेरने लगता है। जिससे भारत रूपी बगीचा सुगन्धित हो उठता है। सांझी को यदि इस बगीचे के पुष्प की संज्ञा दें, तो इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। सांझी कुंवारी कन्याओं द्वारा मनाया जाने वाला अनुष्ठानिक व्रत है। जिसका महत्व हरियाणा ही नहीं, बल्कि समस्त उत्तरी भारत में है, परंतु ब्रज में इसकी छटा निराली है। ब्रज लोक की अपनी विशिष्ट परम्परा है, जिसकी एक छोटी-सी झलक सांझी पूजा में देखी जा सकती है।

यहाँ आश्विन मास के शुक्ला प्रथमा से दशमी तक सांझी कोट की पूजा होती है। इसकी स्थापना घर की किसी दीवार पर की जाती है। स्थापना के पूर्व से ही सांझी के सभी अंग-प्रत्यंग बना लिए जाते हैं और फिर इन्हें गोबर की सहायता से दीवार पर स्थापित कर दिया जाता है। दस दिन नवैद्य आदि से बालिकाएं इसकी पूजा करती हैं। विजयदशमी के दिन इसका समापनोत्सव मनाया जाता है और सांझी को उतार कर निकट स्थित किसी तालाब या नदी में प्रवाहित कर दिया जाता है। ब्रज की लोक संस्कृति में सांझी की आकृतिक, अनुष्ठानिक एवं ऐतिहासिक पक्ष का विशेष महत्व है।

सांझी की स्थापना से कुछ दिन पूर्व कुंवारी कन्याएं मिट्टी के चांद-सितारे तथा शृंगार के उपकरण (कंघी, कंठी, टीका, आंगी, तागड़ी, घाघरी, डूंगें, कंगन, हथफूल, कडी-छलकड़े) आदि का निर्माण कर उन्हें सुखा लेती है। इसके पश्चात् लगाने से पहले इन सभी उपकरणों को सफेदी एवं गेरूएं रंग से रंग लिया जाता है। अमावस्या के दिन गाय के गोबर की सहायता से सांझी के उपकरणों को आंगन की किसी दीवार पर चिपका कर एक नारी आकृति बना ली जाती है। इसके दांत चावलों के दानों से बनाए जाते हैं। सांझी के पास ही एक छोटी सी आकृति बना ली जाती है, जिससे सांझी की सखी धूंधा के नाम से जाना जाता है। सांझी को लगाते समय गांव की औरतें अक्सर ये गीत गाती हैं –

जाग सांझी जाग तेरे माथे लाग्यो भाग,
पीली-पीली पट्टियां सदा सुहाग।
मेरी सांझी के ओर-धोरे चूल्हे की मट्टी
ए में तोय बुझूं सांझी कै तोले की हँसली।
जे मेरे बाप ने गढ़ाई बहना, बीरन मोल चुकाईये
मैया नौ तोले की हँसली।

सांझी लगाते समय कुंवारी कन्याएं सांझी से प्रश्न करती हैं ? कि वह क्या पहनेगी ? क्या ओढ़ेगी ? किस चीज की मांग भरवाएगी ? इसके उत्तर में सांझी मिसरू, चुनरी व मोतियों की मांग करती है –

ए मेरी सांझी का ओढैगी का पहरैगी ?
क्याएं की मांग भरवावैगी,
मिसरू पहरूंगी, चुनर ओढ़ुंगी,
मोतियां की मांग भरवाऊंगी।

सांझी को उतारने से पहले सांझी के पास के भाई की आकृति भी बनाई जाती है। इस प्रकार सांझी के द्वारा कुंवारी कन्याओं को आवश्यक रूप से रेखाकंन एवं रंग मिश्रण का ज्ञान उपलब्ध होता है। इस अन्तर्निहित अभिप्राय के अतिरिक्त अप्रत्यक्षत बालिकाओं के कुतूहल का समाधान उनके ही प्रयत्न में छिपा है। इसके अतिरिक्त आपसी प्रतिस्पर्धा की प्रवृति अपनी-अपनी सांझी के शृंगार का प्रयत्न और भी उपयोगी सिद्ध होता है। प्रारम्भिक वर्षों में बहिनों एवं दादियों द्वारा सांझी अंकन की जो शिक्षा बालिकाओं को दी जाती है वह परम्परा का निर्माण करती है। सांझी की आकृतियां भिन्न-भिन्न जातियों के संस्कारों एवं भावनाओं से प्रभावित होती है। इस तरह से बालिकाओं की बिखरी मनोवृत्ति और सुसम्बन्ध कल्पनाएं इन आकृतियों में लक्षित होती है।

सांझी का अनुष्ठानिक पक्ष बालिकाओं के भावी जीवन की सौभाग्य कामना से सम्बन्धित है। सांझी एक ऐसा आदर्श व्यक्तित्व है, जिसमें देवी भावना निहित होती है। जो परिवार के सदैव कल्याण की इच्छा रखती है। इसी कारण निश्चय ही सांझी के प्रति बालिकाओं की आस्था में भविष्य के मंगल की कामना निहित है। ब्रज लोक में सांझी का पूजना प्रत्येक कुंवारी कन्या से

अपेक्षित है, घर की बड़ी बहिनें, माता या दादी बालिकाओं की सांझी बनाने के उपक्रम में सहायता करती है, बालिकाओं को उनके सम्पर्क में आने से आनन्द आने लगता है, वह गीत सिखाती है और क्रमशः सांझी के प्रति उनमें श्रद्धा भाव जागृत हो जाता है।

कुंवारी कन्याएं प्रतिदिन सन्ध्या के समय की आकृति के समक्ष अपनी सहेलियों को लेकर आरता उतारती हुई यह गीत गाती हैं –

आरता है आरता सांझी माई आरता,
आरते के फूल चमेली के बेले,
इतने भाइयों मैं कौन सा गोरा,
चन्दा गोरा, सूरज गोरा.... आरता है आरता।

बालिकाएं सांझी का आरता उतारने के पश्चात् उसे खाना खिलाती हैं, जब बालिकाएं गीत के माध्यम से खाने को पूछती हैं, तो वह लड्डू एवं पेड़ों की मांग करती, जिसकी झलक यहां पर प्रस्तुत है –

जीम ले हे जीम ले सांझी माई जीम ले,
का जीमेंगी, का पीवेगी, क्याहें को लोटा भरवावैगी।
लड्डू जीमूंगी, पेड़ै खाऊंगी इमरित को लोटा भरवाऊंगी,
भूखी हो तो और ले, प्यासी हो तो पानी ले – जीम ले हे जीम ले।

फिर सभी सहेलियां एकत्रित होकर अपनी दूसरी सहेलियों के घर जाकर सांझी की पूजा करती हुई कहती हैं –

सांझी माई खोल किवाड़,
मैं आई पूजन को द्वार।

वहां पर सांझी की पूजा की जाती है। उसके रूष्ट हो जाने के पश्चात् बालिकाएं उसे मनाने का प्रयास इस गीत के माध्यम से करती हैं –

मेरी सांझी माँगे री डालिया भर गहनो
कहाँ तै लाऊं री डालिया भर गहनो।
मेरा री भईया सुनार कै जावै,
वहाँ तै लावै डलिया भर गहनो।

बालिकाएं सांझी का आरता उतारने एवं खाना खिलाने के पश्चात् घर में चने उबालकर (कौमारी) प्रसाद के रूप में घर-घर वितरित कर स्वयं खाना बाद में खाना ग्रहण करती है।

ब्रज हास-परिहास की झलक सांझी के यहां भी देखने को मिलती है। कन्याएं सांझी की सखी को हलवे की जगह खीचड़ी खाने एवं चुनरी की जगह गूदड़ी ओढने के लिए कहकर उसे चिड़ाती हैं -

मेरी गौरी का खावैगी का ओढ़ैगी,

खीचड़ी खाऊंगी गूदड़ी ओढूंगी।

इस प्रकार नौ दिन तक हर रोज सन्ध्या के समय सांझी की पूजा होती है। दसवें दिन सवेरे सांझी के मुंह को छोडकर शेष भाग उतार कर पास के तालाब या नदी में विसर्जित कर दिया जाता है। जिसे गांव के लडके रास्ते में फोडने का प्रयास करते हैं। सांझी को पानी में विसर्जित करते समय बालिकाएं यह गीत गाती हैं -

सांझी चाली बाप कै बुहाइयो ए राम,

मेरो सांझा लाड़ला बुहाईयो ए राम।

आओ सब मिलकर आस्था एवं लोककला की प्रतीक सांझी कला को विकसित करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएं। हमारा प्रयास.... ब्रज संस्कृति का विकास....

साँझी की सांस्कृतिक परम्परा

डॉ. उमेश चंद्र शर्मा

हमारे देश में वैदिक धारा के साथ एक और धारा का प्रवाह निरन्तर प्रवाहित रहा है, वह है तांत्रिकी; ये दोनों ही धारायें अलग-अलग चलती रहीं। शुद्ध वैदिक संस्कृति भेदभाव मूलक कर्म प्रधान है, शुद्ध तांत्रिक संस्कृति अभेद मूलक भाव प्रधान है, किन्तु ये दोनों परस्पर विरोधी नहीं है। निगमागम भारतीय संस्कृति के मूल स्त्रोत हैं, इन्हीं दोनों धाराओं का समन्वय भारतीय मनीषा ने भिन्न भिन्न पद्धतियों के अन्तर्गत एक स्वरूप निर्मित करने का अनुसन्धान किया। ये सभी प्रयोग मानव मात्र के कल्याण को ध्यान में रखते हुए किये गये।

कालान्तर में लोक मानस ने अपनी सहज बुद्धि से रेखाकंन विधि की रेखानुकृति को परम्परागत रूप में ग्रहण किया, क्योंकि रेखा से रेखा का मिलान मैत्री पूर्ण भाव को पुष्ट करता है। साथ ही शुद्ध सात्विकता के आधार पर अवलम्बित है, जिसमें सीधा सरल स्वाभाविकता की सीमा परिधि में ऋजुता के साथ व्यवस्थित होना

है, इसके चतुष्कोणीय आयतन में आदि से अंत तक दृष्टि पथ से ओझल मंगल मूल गणाधिपति सपरिवार विराजते हैं। इससे ऋद्धि-सिद्धि की उपस्थिति द्योतित है, अष्ट कोण या षट्कोण इसकी अपूर्वता को लक्षित करता है, जहाँ शुभ-लाभ अपना सौरभ विखेरते रहते है, तो स्वास्तिक इसमें निहित ऐसा तत्व है जो सर्वभूत हिते रत: का आदर्श प्रस्तुत करता है, इसके मूल में तुष्टि-पुष्टि का निवास है। इन सभी का सफल संयोजन ही आमोद-प्रमोद है। जिससे जन-जन का उत्तरोत्तर सुख शान्ति के साथ अध्यात्मिकता का मार्ग भी प्रशस्त हुआ। इसी क्रम में विविध उत्सवों के अवसरों की भूमिका के अन्तर्गत घरों में भू चित्रण व भित्ति चित्रांकन करने की परम्परा विकसित हुई।

रेखाओं का विभिन्न धरातलों से उदय होना और अपने गंतव्य पर जाकर समायोजित होते होते किसी न किसी भाव चित्र को साकार कर देना। इस अन्तर यात्रा में मिलना मिलकर उभरना उभरकर झुकना और झुककर किसी बिन्दु के घुमावदार मोड़ पर हृदयस्थ सुन्दरता को अभिव्यक्ति देना यही तो मन की ग्रंथियों का भेदन कहा गया है, इसी के दीप्ति पटों में कोमलता की द्युति प्रसारित रहती है जो दर्शकों की दृष्टि को परस्पर जोड़ देती है जो सर्वथा मंगलमय है। यही वशीकरण विद्या का प्रवेश द्वार है। इसी में जगत की समस्त विधाओं व कलाओं का अनुमोदन निहित है। जिस प्रकार से वास्तु शास्त्र के विधान से निर्मित भवन मानव जीवन की अनेक समस्याओं का समाधान अनजाने ही करता है किन्तु कोई भवन चाहे वास्तु नियमों का उलंघन करता हुआ बनाया गया हो फिर भी आगन्तुक को उस भवन में प्रवेश करते ही मन: स्थिति शान्त और सुखद अनुभूत हो रही है तो वह भी प्रकारान्तर से श्रेष्ठ वास्तु शिल्प ही है। इसी प्रकार लोक में प्रचलित रेखांकन अनेक दोषों का निवारण करने में पूर्ण सक्षम विधा है। लोक प्रचलित पर्व त्यौहार उपवास

अनुष्ठान आदि को करने के पीछे कर्ता के मन में यह दृढ़ विश्वास है कि इसके करने से मेरे परिवारीजन सानन्द रहेंगे। तभी वह परम्परागत रूप से स्वयं करता है और आने वाली पीढ़ियों को करने की प्रेरणा देता है।

ब्रज में माधुर्य भक्ति युगल स्वरूप की सरस भाव भूमि में पल्लवति हुई; वह आश्विन मास का पितृ पक्ष था। राधा अपनी सखियों के साथ कुसुम सरोवर के कुसुमित कानन में पुष्प चयन के लिये जाती हैं, चयनित सुमनों को उपवन के मध्य भाग में रखकर उन्हें एक-दूसरे के साथ सटाकर रखने का खेल प्रारंभ हुआ ही था कि आकृति का रूप निर्मित होता चला गया, उसी समय झुरमुट में से श्रीकृष्ण आ निकले, अपने ही चित्र को देखकर मोहित हो गये। उससे भी सुन्दर अपनी छवि मुकुलित कलियों से सजाने लगे जिसे बनाते-बनाते सब कुछ विसार कर हृदय में विराजी राधाजी का चित्र बनता चला गया जिसकी आभा को देखकर सभी अवाक् रह गये। यहीं से राधा कृष्ण की सांझी का स्वरूप निर्मित होता है। यहाँ तत्सुखी भाव स्वयं उद्भाषित है।

जैसे-जैसे मंदिर संस्कृति मुखर होती चली गई, वैसे-वैसे किशोर-किशोरी द्वारा खेली गई उन सभी कलाओं का मंदिर परिसर में अनुकरण किया जाने लगा, ये सभी कलायें ब्रजवासियों में पूर्व प्रचलित थी। उन्हीं कलाओं को आचार्य मानस ने एक प्रकार से संस्कारित कर दिया। उसी में से एक यह कमनीय कला सांझी है, जो भक्त की भावना से रूप ग्रहण करती है; वह रूप ही भक्तों को आनन्दित करता है लेकिन विधान का तथ्यगत रूप सायंकालीन सेवा पूजा आरती से है। प्रायः तांत्रिकी उपासना सायंकाल में ही सम्पन्न होती हैं।

वर्तमान समय में इन परम्पराओं का पतन हो रहा है, फलस्वरूप सामाजिक विघटन की स्थिति आप हम समझ सकते हैं। लोक में परम्परानुसार बनाई गई आकृति सही अर्थों में वह उपासना के ही भावों से सृजित है, उसमें अन्तर स्थित आस्था की फलश्रुति उसे लाभान्वित भी करती है। मेरे विचार से इसे कला की संज्ञा देना उपयुक्त नहीं होगा क्योंकि इसको

बनाने वाले कलाकार नहीं जन सामान्य आराम से धैर्यपूर्वक उस पर्व की साधना विधान से बनाता है, उसे कलाकार की भांति प्रशंसा अथवा किसी पुरस्कार की अपेक्षा नहीं है। आज परम्परायें बिखर रही हैं, अत: हमारा प्रयास इसके कला-बोध की रक्षा संरक्षा करना ही रह गया है, जिसे प्रबल-प्रयासों से किया जाना समीचीन है।

साँझी और संजा का अन्योन्याश्रित संबंध प्रतीत होता है। संध्या संद्योपासना, साँझी बनती तो दिवस के प्रथम और द्वितीय प्रहर की संधि से इसका बनाना प्रारम्भ होता है, ऐसा कोई विधान नहीं है, किन्तु प्राय: इसी समय से इसकी रूपरेखा तैयार की जाती है। संध्या काल की पूर्व वेला में भक्त की भावना का स्वरूप दर्शनीय रूप में भक्तों के समक्ष उजागर होता है। संध्या काल की अपूर्वता का सत्कार धूप दीप आरती मंगल वाद्यों के साथ गायन के मधुर स्वरों से समूचे भारत वर्ष में होता है।

शरद की साँझ इतनी सलौनी होती है कि मन उस भाव धारा में स्वत: रमने लगता है। शरद का उल्लसित प्राकृतिक स्वरूप अपनी किशोरावस्था की रंगमयी वनस्थली में किलकारियाँ भरता सा प्रतीत होता है। किसी को भी लुभाता रहता है। महाराष्ट्र की लोक संस्कृति व कला साधक इसे भुलाबाई कहते हैं तो उड़ीसा की धरती पर यह मालुकुनी के रुप में कुआरी कन्याओं द्वारा आराधित है।

अलीगढ़ के आस-पास कहीं-कहीं साँझी को "तारई खेलना" भी कहा जाता है, कतिपय महापुरुष इसे कन्याओं के मन की वाणी भी कहते हैं। बुन्देलखण्ड में सांझुलदे कहा जाता है, इसका अभिप्राय देवी होता है। इस अर्थ में संध्या देवी का भाव स्पष्ट होता है। सांझी के साथ चन्द्र सूर्य की निर्मिती संध्या के दोनों रूपों का अंकन है, प्रात: संध्या व सायं संध्या। चन्द्र, सूर्य, सांझी के भाई माने जाते हैं।

गोबर साँझी में केवल बछिया का गोबर ही प्रयुक्त होता है। इसकी पूजा का विधान अक्षत यौवना अपने पितरों को प्रसन्न करने के लिये ही करती है, वैवाहिक बन्धन में बंधने के पूर्व वर्ष में साँझी पूजा का लोक विधि से उद्यापन किया जाता है। लोक श्रुति के अनुसार पितर हमारी वंश वृक्ष वृद्धि व बालकों के रक्षक माने जाते हैं।

संध्या की कथा हमें शिव महापुराण में प्राप्त है, जिसमें वह यज्ञ से प्रादुर्भूत हुई, यज्ञ करने वाले मेघातिथि मुनि थे अत: वह उन्हीं की कन्या हुई तथा अरुंधती नाम से जानी गई। इस यज्ञ के उपदेष्टा वशिष्ठ थे, संध्या ने वशिष्ठ को वरण किया किन्तु शिव के आदेश से अग्नि ने संध्या का पावन शरीर प्राप्त कर सूर्य मण्डल में प्रवेश

किया। सूर्य देव ने उसके शरीर को दो भागों में विभाजित कर अपने रथ पर शोभित कर दिया। शरीर का शिरोभाग प्रात: संध्या जो कि देवताओं को प्रिय था। अधो भाग पितरों को प्रिय था अत: सायं संध्या के नाम से जगत में विख्यात हुआ। इसीलिये पितृपक्ष में साँझी उपासना का विधान तथा इसकी अनुष्ठान विधि का संदर्भ कुमारी कन्या की साधना का युक्ति युक्त लोक चित्र गीतमय उपस्थित हुआ। यही इसका लोक तात्विक स्वरुप है। इसको विसर्जन के लिये जल की बहती हुई धारा में प्रवाहित किया जाता है, वह धारा प्रकारान्तर से सिंधु में समाती है, इसीलिये लोक गायन में साँझी की ससुराल सागर में कही गई है। पितृ पक्ष में वह अपने मायके अर्थात् पृथ्वी पर आती है। लोक देवी के रूप में सुकुमारियों से पूजित होती है। यह विधान पितरों को प्रसन्न कर मनोकामना पूर्ण करने का भी है। पितरों की सुखद अनुभूति कन्याओं को अनुकूल वर की प्राप्ति कराने में सहायक होती है।

हमारे ब्रज प्रान्त में इसको बड़ा ही मनोरम रूप अनुष्ठान के रुप में मिलता है। यहाँ साँझी लोक देवी के रूप में प्रतिष्ठित है। साँझी को अंकित किया जाता है बछिया के गोबर से, सर्वप्रथम भींत पर गौरी का रेखाचित्र बनाया जाता है, इसी को सांझी कहा जाता है। इनके मस्तक पर टीका, कानों में झुमके, नासिका में नथ आदि शृंगार किया जाता है। सायं समय आरती की जाती है। इस समूचे प्रसंग में अन्तर्निहित कथानक सांझी का मायके में आना और पति की स्मृति को स्मरण कर विरहावस्था में रहना जिसमें खेलने के लिये चोपड़ बिछाना। पान सुपाड़ी और उनके लिये मिठाई से भरी डलिया रखना। एकादशी को उपवास की प्रसाद सामग्री। पातर दोना आदि। सांझी को ओढ़नी उढ़ाना। जब पति के वियोग में अधीर होने लगती है सांझी तो नसैनी पर चढ़कर पति को दूर से आने की संभावना में पथ निहारती है यह सांझी उत्सव का चौदहवाँ दिवस होता है। पंद्रहवें दिन एक लगड़ा ब्राह्मण व कौआ का चित्रण किया जाता है जो पति के आगमन की सूचना देते है। नरवर कोट बनाया जाता है।

इसके अन्दर ही साँझी और कोट की मुखाकृति भी बनती है। प्रतिदिन सांझी को नूतन वस्त्र धारण कराते हैं। एक तारा से आरम्भ करते हैं पाँच थापे, चंदा, सूरज, तिवारी, चौपड़, सास बहू का बिलौना, छड़ी छाता, अठपंखुरियाँ फूल, नगाड़ा, पंखा, जनेऊ, इन उपकरणों के साथ साँझी का सोलह शृंगार किया जाता है। वैविध्यता को लिये सभी प्रांतों में छोटे-मोटे अन्तरों से लोक देवी सांझी का यह उत्सव मनाया जाता है।

साँझी पूजन का एक दूसरा मनोरम रूप है सांझी का कोट। कोट दीवाल पर काफी लंबा चौड़ा बनाया जाता है, गोबर से रखा जाता है, और प्रति दिन उसमें कुछ वृद्धि की जाती है। अन्तिम दिन तक वह बिल्कुल पूरा हो जाता है।

सांझी के सम्बन्ध में यह बता देना आवश्यक है कि सांझी के गीतों में छोटी-छोटी बालिकाएँ अपने भाइयों की मंगल कामना भी करती है।

कुमारी लड़कियाँ दीवार पर सांझी का रेखाचित्र बना कर उसे अनेक प्रकार के आभूषणों से सुसज्जित करती है। वे मिट्टी से तरह-तरह के आभूषण बनाती हैं और फिर उन को खड़िया मिट्टी से पोत देती हैं। कहीं-कहीं उन पर रंग भी कर देती है। वे साँझी के कानों में झूमके पहनाती हैं, नाक में नथ पहना कर उस में मोती डालती हैं, हाथों को कंगन से सजाती हैं और पैरों में अनेक आभूषण पहना कर अपनी साँझी को दर्शनीय बना देती हैं।

सायंकाल के समय मुहल्ले की लड़कियाँ मिल-जुल कर एक दूसरे के घर जा कर साँझी की आरती करती हैं। यहाँ हम साँझी की आरती का एक लोकगीत प्रस्तुत करते हैं। इस में बहन ने अपने भाई-भतीजों की मंगल कामना करते हुए उन को न्यौता जिमाने का भाव भी प्रकट किया है:-

आरती

आरता री आरता मेरी संझा माई आरता।
काहे का दिवला काहे की बाती।
काहे का तेल जले सारी राती।
सोने का दिवला नरमे की बाती।
सरसों का तेल जले सारी राती।
गोरा री गोरा मेरा बीजू भाई गोरा,
गोरे के बाल झबाझब हों।
पोई है पुरियाँ बिराजेगा भात,
नौंत जिमाऊँ अपने भाई-भतीजे सात।
जहाँ पै बैठे मेरे सगले भाई।
चिरजीवो मैया के जाए,
जाए री जाए गोद खिलाए।

ऐसे ही और भाइयों के नाम ले कर बहनें अपने सभी भाइयों की मंगल कामना करती हैं। अब हम सांझी का एक दूसरा लोकगीत प्रस्तुत करते हैं। इस में एक लड़की अपनी साथिन से प्रश्न करती है कि तेरे कितने भाई हैं। वह बताती है कि मेरे चार भतीजे हैं और आठ भाई हैं। गीत इस प्रकार है :-

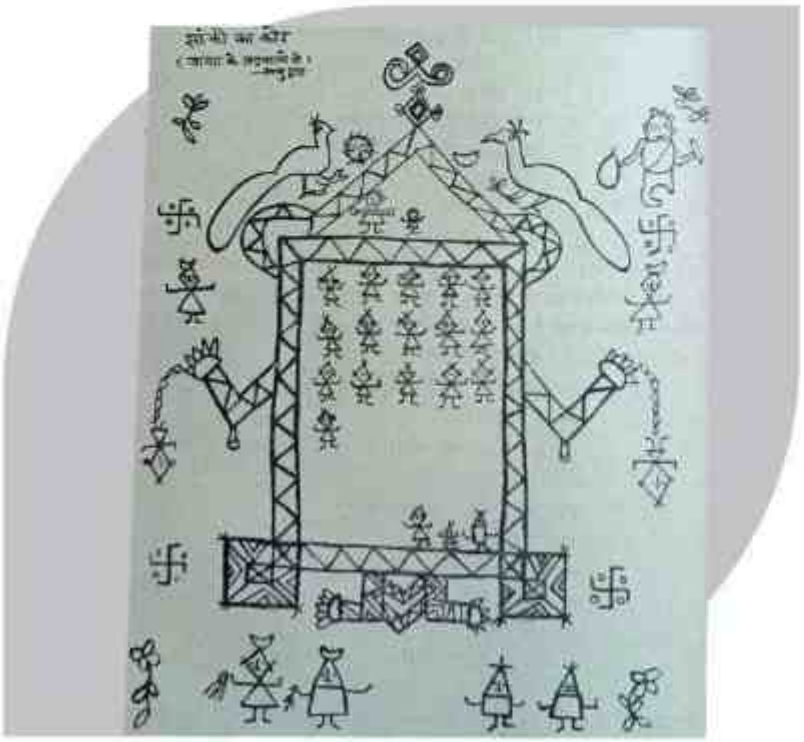

मेरी साँझी के ओरे धोरे,
बुई है चौलाई,
तू कह दे री शन्नो बीबी,
कै तेरे भाई ?
चार भतीजे मेरे आठक भाई।
चारों का उंडन मंडन,
छओं की सगाई।
मेरी साँझी के ओरे धोरे
बुई है चौलाई,
तू कहदे री कुसम बीबी,
कै तेरे भाई?

इस प्रश्न के उत्तर में फिर आगे का भाग दोहराया जाता है और उस के पश्चात् फिर किसी

तीसरी बहन का नाम ले कर प्रश्न किया जाता है। इस प्रकार इस गाने में बहन अपने भाइयों का परिचय देती है।

एक और लोकगीत सुनिए। यह गीत ठेठ ग्रामीण गीत है, जिस में ग्राम्य भाषा का पूरा पुट पाया जाता है। इस में बहन कहती है कि भाई तेरे बाड़े में मुड़-तुड़ कर भैंस बैठी है; उस का दूध तुम्हारी बहू बिलोती है और उस दूध के बिलोते समय उस के हाथों की चूड़ियों की झंकार होती है। दूध बिलो चुकने पर उस में से पी तुम्हारी मा काढ़ती है। घी निकालते समय वह पुत्रों को ललकारा भी देती है, क्योंकि उसे भय है कि कहीं वे कृष्ण के समान यशोदा के हाथ से मक्खन छीन कर न ले जायें। इसके आगे गीत में कहा गया है कि घर की अग्नि जलती है और चौबारे में रात्रि के समय दीपक जलता है, और बहनों के सुपुर्द गोबर पाथने का काम किया गया है। गीत इस प्रकार है:-

मुड़ तुड़ बैठे झोट्टरियाँ, बीरो थारे बाड़े में।
दूध बिलोवें थारी बहुअड़ियाँ, चुड़ले के झंकारे में।
घी काढ़ें थारी भैयड़ियाँ, पुत्रों के ललकारे में।
गोबर पाथें थारी भैंनड़ियाँ, भैया के ललकारे में।
आग जलै दो लक्कड़ियाँ, दिया जलै चौवारे में,
मुड़-तुड़ बैठी झौट्टिड़ियाँ, यशी तेरे बाड़े में।

इसके पश्चात् आगे का अंश दोहराया जाता है। इस क्रम से बहन अपने अन्य भाइयों के नाम भी लेती है। यह चित्र लोहवन के ब्राह्मण परिवार में बने कोट का है:-

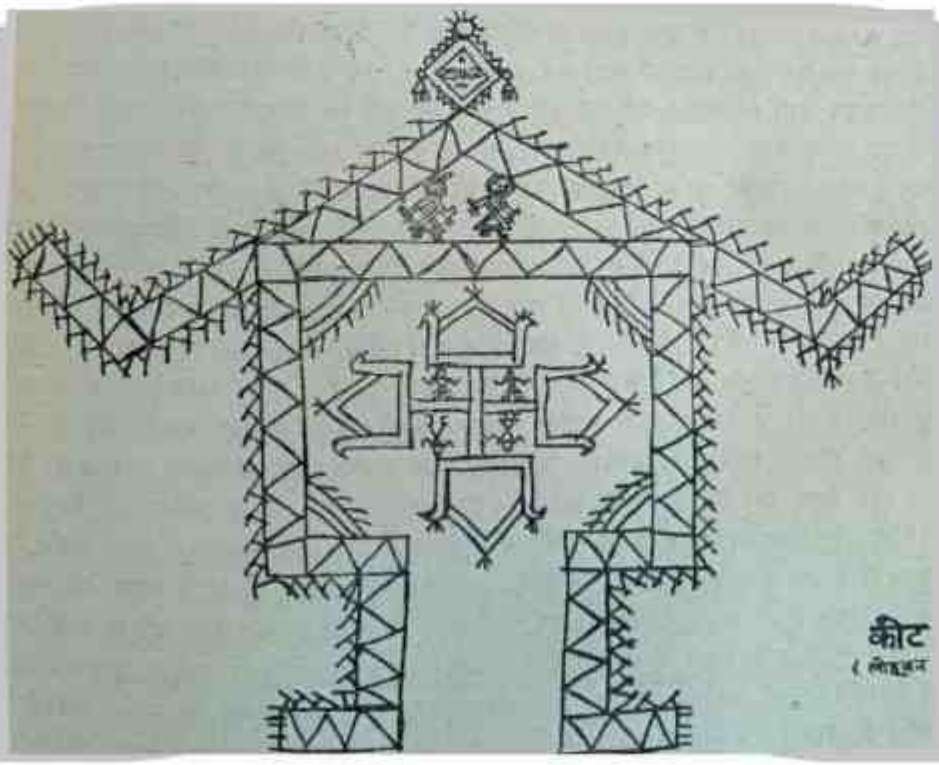

साँझी कलाकारों का परिचय

स्टेंसिल कला का जादूगर
संजय सोनी

प्रयागघाट मथुरा निवासी संजय सोनी साँझी बनाने के साथ साँझी के स्टेंसिल (खाके) भी बनाते हैं। जड़िया घराने के नाम से विख्यात संजय के परबाबा भैरोमल जडिया ने रंगजी के मंदिर में स्थित सोने के खम्बे पर सोना जड़ने का कार्य किया था। आठ वर्ष की बालपन अवस्था से संजय ने इस कला को अपनाया। आज संजय सोनी का नाम इस कला के विख्यात कलाकारों में आदर के साथ लिया जाता है। साँझी के खाकों के निर्माण के साथ-साथ वह जल सांझी, फूल सांझी व सूखे रंग की साँझी को बड़ी कुशलता के साथ बनाते हैं।

वृन्दावनीय साँझी कला का नक्षत्र
विश्वजीत दास

विश्वजीत दास की बचपन ही चित्रकला में रुचि रही। रंगों के साथ खेलना उन्हें बाल्यावस्था से ही प्रिय रहा। वृन्दावन के देवालयों में बनने वाली साँझी को देखकर उनके मन में इस कला को सीखने की चाह उठने लगी। वह भी इस कला को सीखना चाहते थे। मंदिरों में साँझी निर्माण के समय वह घण्टों साँझी बनाने वालों को देखते रहते थे। साँझी को उपासना का अंग मान उन्होंने इस कला की बारीकियों को सीखा। आज विश्वजीत दास साँझी कला के जाने-माने कलाकार बन गए है। उन्हें वर्ष 2008-09 में साँझी लीला लघुचित्र कला के लिए उत्तर प्रदेश सरकार पुरस्कार एवं साँझी स्टेंसिल कटिंग के लिए वर्ष 2014-15 में राम मनोहर लोहिया शिल्पकला पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं। उनका मानना है कि साँझी में नवाचार का प्रयोगों करने से इस कला को बढ़ावा मिलने में आसानी होगी। इस कला को सीखने के लिए कलाकार का कला के प्रति पूर्ण समर्पण होना आवश्यक है।

साँझी कलाकारों का परिचय

साँझी लघुचित्र शैली के बेजोड़ कलाकार
ब्रजगोपाल गुप्ता

गोपीनाथ घेरा, वृन्दावन निवासी ब्रजगोपाल गुप्ता प्रसिद्ध साँझी लघुचित्र शैली के चित्रकार हैं। विगत 38 वर्षों से वह निरन्तर अपनी चित्रकला साधना में रत हैं। इस कला के लिए उन्हें उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा 2015-16 में पुरस्कृत भी किया जा चुका है। इसके साथ ही उन्हें ताज महोत्सव एवं ब्रज संस्कृति शोध संस्थान द्वारा वर्ष 2019 में उन्हें ब्रज संस्कृति सेवी सम्मान दिया गया था। चित्रकला के साथ-साथ वह साँझी कला के भी अच्छे जानकार हैं, विगत अनेक वर्षों से वह साँझी का निर्माण कर रहें हैं।

रंगोली कला में सिद्धहस्त
कमलेश्वर शर्मा

कदमखण्डी कालोनी, औरंगाबाद निवासी 29 वर्षीय कमलेश्वर शर्मा की रुचि बाल्यावस्था से ही रंगों से खेलने की रही। बढ़ती उम्र के साथ उनकी यह रुचि भी परिपक्व होती चली गयी। स्नातक की परीक्षा पास करने के उपरांत उन्होंने ने इस कला को निखारने के प्रयास प्रारम्भ किये। अनेक सामूहिक एवं एकल प्रदर्शनियों का प्रदर्शन भी आपने किया। उत्तर प्रदेश ब्रजतीर्थ विकास परिषद द्वारा रसखान एवं ताजबीबी समाधि उपवन में आयोजित अष्ट दिवसीय साँझी महोत्सव में आपने अपनी कला का अद्वितीय प्रदर्शन किया।

साँझी नाम सहेली कौ है

राधा गोविन्द पाठक

चलौ री चलौ, साँझी संग सहेली।
जमुन कूल द्रुमि डारन चलि सखि,
फुलवा वीनत हेली॥
श्याम वरन पीरौ पट जाकौ
विचरत वनहि अकेली॥
उरझौ चीर अरनि की ड़रियाँ,
सुरझावत अलबेली॥
पट सुरझाय, नयन अरुझाये,
इकटक निरखत मेली॥
वाही बन चलि चलरी जित बुअ
वीनत फूल नवेली॥

नटवर, अनुपम रुप बनायौ
चलत चपल चपला सी डोलत
गात सुचम्पई पायौ।
लीप भींत चन्दन गोबर सों
चित्रित रुप सजायौ।
पूजन चली अली मिलि साँझी
शुभ घरी शुभ दिन आयौ
नव नव फूलन नव नव लीलन
रचि पचि दरस करायौ
पूज नवीनी आरति कीनी
षठ व्यंजन अरपायौ
सिगरी रात पोढि सुख सेजनि
पूरन पुन्य कमायौ।

साँझी लीला (मुक्तक)

अति दिव्य सुरम्य भूमि ब्रज की, सुर नर मुनि देव लुभानी है।
निधिवन की शोभा को बरने, जमना कौ पावन पानी है।
गिरिवर की पुण्य तरहटी में, ब्रजरज सिग पाप नशानी है।
ओ मूरख तेज न फिर बिरथा, बिंदाबन जग रजधानी है॥

ब्रज लोककला शैली सांझी, जो साँझ पदिक अभिव्यंजन है।
उद्घाटित श्रीराधा अ सौं, श्रीकृष्ण प्रेम मनरंजन है।
सुंदरतम् आकृति भाव जनित, दृग तेज निनादित खंजन है।
भव तारन हित मद लोभन सौं, हरि नाम रूप परिभंजन है॥

जब सांझ परे गौचारन करि, घर लौटत किशन कन्हाई है।
स्वागत काजें ब्रज गोपिन नैं, सांझी अति दिव्य बनाई है।
तरु फूल पात को रंग भर्यौं, तेजस रुचि नेह सजाई है।
द्वापर की बात पुरानन में, कछु न्यों कह कैं समझाई है॥

पितरन को पच्छ लगै जब सौं, घर द्वारन पांति घनी सांझी।
जे रीत पुरातन पुरखन की, गौ गोबर छाप जनी सांझी।
ब्रज बसुधा के फल फूलन ते, सिंगारित शील सनी सांझी।
कान्हा के प्रति ब्रज गोपिन कौ, तब नेह अपार बनी सांझी॥

अठबारे में नौ परब परें, पकवान उड़ावत सैंकारे।
घ्यौ दूध दही माखन मिसरी, छप्पन भोगन के चटकारे।
खामत खेलत ब्रजपति डोलै, हिय तेज करै बारे न्यारे।
ब्रज तौ उत्सव की भूमी है, निस दिन ह्याँ पर्व मनै भारे॥

चन्द्र प्रताप सिकरवार

साँझी महोत्सव

18 से 25 सितम्बर 2022

आकर्षक सांझियों से सजा रसखान व ताजबीबी उपवन

श्रीकृष्ण के अनन्य भक्त रसखान और ताज बीबी के गोकुल और महावन के मध्य स्थित उपवन (समाधि परिसर) में 18 सितंबर (रविवार) से ब्रज की पुरातन परंपरा को जीवंत करने वाले सांझी महोत्सव का भव्य शुभारंभ हुआ। लगातार आठ दिन परिसर में जगह-जगह सांझी सजायी गयी जबकि रोजाना सायं 4 बजे से मुक्ताकाशीय रंगमंच पर मंचन व अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रम हुए। सांझी संगोष्ठी और ब्रज भाषा कवि सम्मेलन परिसर स्थित वातानुकूलित चलचित्र केंद्र में आयोजित हुए।

पहले दिन 18 सितंबर को महोत्सव का शुभारंभ भाजपा की जिलाध्यक्ष श्रीमती मधु शर्मा, उत्तर प्रदेश ब्रज तीर्थ विकास परिषद के डिप्टी सीईओ श्री पंकज वर्मा, जीएलए विश्वविद्यालय के प्रति उप कुलपति डॉ. अनूप गुप्ता आदि ने रसखान समाधि स्थल पर दीप प्रज्ज्वलन व फीता काट कर किया। गोकुल नगर पंचायत के

चेयरमैन श्री संजय दीक्षित की उपस्थिति उल्लेखनीय रही।

उ.प्र. ब्रज तीर्थ विकास परिषद, मथुरा और जीएलए विश्वविद्यालय, मथुरा के संयुक्त तत्वावधान में ये अष्ट दिवसीय महोत्सव 25 सितंबर तक चला। इसमें उप्र पर्यटन विभाग, राजकीय संग्रहालय, मथुरा और ब्रज संस्कृति शोध संस्थान, वृंदावन का विशेष सहयोग रहा। समूचे परिसर में आठों दिन कलाकारों ने आकर्षक सांझी बनायीं। रंगों के अलावा गोबर से सांझी बनाने में महिला और पुरुष कलाकार लगातार जुटे रहे।

महोत्सव के शुभारंभ मौके पर मथुरा के पर्यटन अधिकारी श्री डी.के. शर्मा, राजकीय संग्रहालय के निदेशक श्री यशवंत सिंह राठौर, उ.प्र. ब्रज तीर्थ विकास परिषद के पर्यावरण सलाहाकार श्रीमुकेश शर्मा, उ.प्र. ब्रज तीर्थ विकास परिषद के ब्रज संस्कृति विशेषज्ञ डा. उमेश चंद्र शर्मा, ब्रज संस्कृति शोध संस्थान के सचिव श्री लक्ष्मी नारायण तिवारी, संस्थान के प्रकाशन अधिकारी श्री गोपाल शरण शर्मा, उप्र ब्रज तीर्थ विकास परिषद के सहायक अभियंता श्री आरपी यादव व गीता शोध संस्थान, वृंदावन के समन्वयक श्री चंद्र प्रताप सिंह सिकरवार आदि उपस्थित रहे। समूचा परिसर केसरिया ध्वज व पट्टिकाओं से अटा पड़ा रहा। रसखान समाधि परिसर में सांझी देखने वालों का तांता लगा रहा। सायं काल सांस्कृतिक कार्यक्रमों की श्रृंखला में

नृत्य व गायन से परिसर भक्तिमय हो गया। सांझी महोत्सव में रसखान समाधि के ठीक सामने राजकीय संग्रहालय की ओर से अलग से चित्र गैलरी सजाई गयी, जिसमें परंपरागत रीति रिवाज के चित्रों के जरिए लोक कला को समझाया गया। इसमें वे चित्र सम्मिलित किए गए थे, जो विभिन्न अवसरों पर घरों में बनाए जाने वाले थे। उनका विवरण दिया गया था।

सांझी बनाते समय कलाकारों में था भक्ति भाव

सांझी महोत्सव में पहले दिन से ही कलाकारों में भक्ति भाव दिखा। कलाकार सांझी के चित्र बनाते समय एक साधना करते दिखे। ब्रज संस्कृति शोध संस्थान के सचिव श्री लक्ष्मी नारायण तिवारी ने कहा कि सांझी के चित्र के बनाना अपने आप में एक साधना है। इसी भाव से चित्र बनाना एक पूजा है। आज भी वृंदावन के अनेक मंदिरों के जगमोहन में सांझी बनाने की परंपरा का निर्वहन हो रहा है। ये परंपरा वैदिक काल से चली आ रही है।

इस अवसर पर कलाकारों द्वारा सांझी महोत्सव में बनाई गयी रंगोली व सांझी में अंतर को भी समझाया। ब्रज में कृष्ण की लीलाएं सांझी में चित्रित किए जाने की परंपरा को अब सरकारी स्तर से आगे बढ़ाया जा रहा है। सभी ब्रजवासियों को यही प्रयत्न करना है कि ये पुरातन कला जीवित रहे।

"बनी-ठनी से रसिक बिहारी" नाटिका का मंचन

महोत्सव के दूसरे दिन 19 सितंबर को सांस्कृतिक मंचन के अंतर्गत बनी ठनी नाट्य रूपक का मंचन हुआ। सांस्कृतिक मंचन का शुभारंभ उत्तर प्रदेश ब्रज तीर्थ विकास परिषद के डिप्टी सीईओ

श्रीपंकज वर्मा और मथुरा दूरदर्शन केंद्र के सहायक निदेशक श्री सत्यव्रत सिंह द्वारा कलाकारों को पटुका पहना कर किया।

महोत्सव में ये मंचन दिल्ली के थियेटर ग्रुप फाइव एलिमेंट्स के कलाकारों द्वारा किया गया। विदिति हो कि ब्रज संस्कृति शोध संस्थान वृंदावन द्वारा प्रकाशित नर्मदा प्रसाद उपाध्याय की पुस्तक बनी-ठनी एक प्रेमकथा से चित्रकला तक पर आधारित नाटक "बनी-ठनी से रसिक बिहारी" का मंचन किया गया। कलाकारों के जीवंत अभिनय ने सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। अभिनय करने वाले दिल्ली के कलाकारों में साकेत, मानसी मेहता, रवि, आशा सिंह, निधि सक्सेना, रॉबिन खन्ना, भरत किसरो, शिव, मानसी मेहता, श्रीहान, नीरज आदि प्रमुख थे। निर्देशन एवं नाट्य लेखन राखी मानव ने किया।

संत किशोरी शरण भक्तमाली की भजन संध्या

महोत्सव के दूसरे दिन सोमवार को ही सांस्कृतिक मंचन के क्रम में संत किशोरी शरण भक्तमाली मुखिया जी व उनके साथी गायक बिहारी दास एवं नंदलाल ने समाज गायन और साँझी के पदों का गायन किया।

मुक्तकंठ से वृन्दावन की सांझी कला की प्रशंसा

सांझी महोत्सव के दूसरे दिन की सांझी चित्रण में चरण दास, कृष्ण गोपाल, वैष्णव दास व मनमोहक सांझियों ने सबका ध्यान अपनी ओर खींचा। लोगों ने मुक्तकंठ से वृन्दावन की साँझी कला की प्रशंसा की। विशिष्ट अतिथि मथुरा इप्टा के योगेश शर्मा

रहे। वृंदावन से आए कलाकार सौरभ गोस्वामी, सुमित गोस्वामी, लक्ष्मी देवी, मालती देवी, संजय सोनी, विश्वजीत दास, ब्रजगोपाल गुप्ता, मदनमोहन शर्मा, कमलेश्वर शर्मा, दीपाली कुलश्रेष्ठ, शालनी और विजय आदि ने अपनी सांझियों का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। इन सांझियों में रंग और गोबर से बनायी कई झांकी सम्मिलित थीं। तिथि के हिसाब से गोकुल की लक्ष्मी व मालती तथा अर्डीग की पूनम यादव ने गोबर से आकर्षक सांझी बनायीं।

बेणी-गूंथन रासलीला का भव्य मंचन

महोत्सव के सांस्कृतिक मंचन के अंतर्गत वेणी गूंथन रासलीला का भव्य मंचन तीसरे दिन हुआ। स्वामी घनश्याम की मंडली के कलाकारों ने इस लीला का जीवंत अभिनय कर सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया।

इस मौके पर ब्रज संस्कृति विशेषज्ञ डॉ. उमेश चंद्र शर्मा ने बेणी गूंथन लीला से पूर्व जानकारी दी कि वृंदावन के स्वामी घनश्याम की मंडली के कलाकारों द्वारा जो लीला प्रस्तुत की जा रही है, उसे वेणी गूंथन सांझी लीला नाम से पुकारा जाता है। यह ब्रज की प्रमुख रासलीला है। इस लीला के दौरान राधा और कृष्ण के रास से समूचा परिसर वृंदावन जैसा भक्तिमय बन गया। वेणी गूंथन लीला के दौरान अवकाश प्राप्त डीएफओ और उप्र ब्रज तीर्थ विकास परिषद के पर्यावरण सलाहकार मुकेश शर्मा व राजस्व निरीक्षक रामवीर सिंह आदि भी उपस्थित रहे। लीला मंडली के निर्देशक घनश्याम व उनके कलाकारों का पूर्व में पटुका पहना कर स्वागत किया गया। महोत्सव में चौथे दिन रसखान समाधि परिसर स्थित ओपन एयर ऑडीटोरियम लोकगीतों से गूंज उठा।

जनेऊ और धार्मिक चिह्नों की सांझी चित्रण

रसखान समाधि परिसर में सांझी महोत्सव के पांचवे दिन कलाकारों ने द्वादशी की सांझी "जनेऊ" का गजब का चित्रण किया। इससे एक दिन पूर्व चौथे दिन एकादशी पर यमुना की सांझी बनायी गयी जबकि तीसरे दिन घर की तिवारी की सांझी बना कर कलाकारों ने परंपरा को आगे बढ़ाया।

लोकगीत और लोकनृत्य मंचन

महोत्सव के छठवें दिन श्रीमती भारती शर्मा के ग्रुप ने लोकनृत्य प्रस्तुत किया जबकि ओमप्रकाश डांगुर व साथी कलाकारों ने गायन व अभिनय के कार्यक्रम प्रस्तुत किए। भारती शर्मा और साथियों ने मेरे बांके बिहारी पीया चुरा लिया मेरा जीया, नैन में श्याम समाइगौ मौहि प्रेम कौ रोग लाइगौ। भजन पर नृत्य प्रस्तुत किया।

लोकगीत और जिकड़ी भजन गायन

सांझी महोत्सव में 24 सितंबर को शाम काल ब्रज के लोकगीत, जिकड़ी भजन और रसिया के कार्यक्रम हुए। सांस्कृतिक कार्यक्रमों की कड़ी में सबसे पहले चाहरवाटी आगरा के महावीर सिंह चाहर व साथी कलाकारों ने ब्रज की बोली में लोकगीत और जिकड़ी भजन गाकर सबको मुग्ध कर दिया। राम रसिक ब्रजवासी कमई वालों ने ब्रज के रसिया पेश किए। उन्होंने जिन रसिया का गायन किया, उनमें ज्यादातर रसिया स्व स्वामी रामस्वरूप शर्मा द्वारा रचित थे।

स्कूली बच्चों ने सांझी कला को समझा

रसखान समाधि परिसर में अष्ट दिवसीय सांझी महोत्सव में सातवें और आठवें दिन मथुरा शहर, भरतपुर, बयाना, लोहवन, बलदेव, गोकुल व महावन आसपास के स्थानों के विद्यालयों के हजारों बच्चों ने भाग लिया। के आर गर्ल्स कॉलेज व लोहवन के स्कूलों के बच्चों ने सांझी के स्थान पर अपने हाथों से रंगोली बनायी। बच्चों ने कलाकारों से सांझी तैयार करने की विधि और ब्रज में सांझी के महत्व को समझा। कलाकारों के साथ फोटो खीचें। रसखान समाधि और ताज बीवी समाधि भी देखी। साथ ही सेल्फी ली। गोकुल नगर पंचायत के चेयरमैन श्री संजय दीक्षित का लगातार सहयोग प्राप्त हुआ। इस मौके पर सांझी देखने को एक दर्जन से ज्यादा स्कूलों के बच्चे रसखान समाधि पहुंचें और सेल्फी ली। साथ ही ग्रुप फोटो भी कराए। वे रसखान और ताज बीबी समाधि भी पहुंचे।

उ.प्र. ब्रज तीर्थ विकास परिषद एवं उ.प्र. पर्यटन विभाग द्वारा ब्रज में कराये गये कार्य

डी.के. शर्मा (पर्यटक अधिकारी, मथुरा)

गोकुल

1. गोकुल स्थित नन्द भवन परिसर में पार्किंग से मन्दिर तक पहुँच मार्ग का पुनर्विकास एवं सौन्दर्यीकरण का कार्य 202.27 लाख की लागत से।

2. नन्दभवन पार्किंग के पास नये घाट का निर्माण तथा मुरली घाट पर होली चबूतरे के सौन्दर्यीकरण का कार्य 226.64 लाख की लागत से।

3. गोकुल स्थित नन्दभवन सीढ़ियों से रास चबूतरे होते हुए नन्द चौक तक सौन्दर्यीकरण का कार्य 36.58 लाख की लागत से।

4. रसखान समाधि के सौन्दर्यीकरण में संपूर्ण परिसर का पाथवे, बोलार्ड लाईटिंग, स्ट्रीट लाइट, उद्यानीकरण, सोलर पावर प्लांट, लाइटिंग, ओपन एयर थियेटर, बेंचों का निर्माण 324.45 लाख की लागत से।

5. रसखान समाधि परिसर में आने वाले पर्यटकों हेतु फूडकोर्ट, इण्टरप्रिटेंशन सेण्टर एवं जन सुविधा केन्द्र का निर्माण कार्य 321.67 लाख की लागत से।

6. रसखान समाधि का संरक्षण एवं सौन्दर्यीकरण का कार्य 246.36 लाख की लागत से।

महावन

1. महावन स्थित ब्रह्माण्ड घाट के जीर्णोद्धार एवं सौन्दर्यीकरण कार्य के अंतर्गत जनसुविधा केन्द्र, पार्किंग एवं चबूतरे का निर्माण कार्य 67.35 लाख की लागत से।

2. ब्रह्मांड घाट पर एक नये घाट का निर्माण एवं पुराने घाट का जीर्णोद्धार 217.52 लाख की लागत से।

3. महावन स्थित चिन्ताहरण महोदव मंदिर में घाट के सौन्दर्यीकरण का कार्य 121.36 लाख की लागत से।

बरसाना

1. राधारानी मंदिर के समीप उद्यान विभाग की भूमि पर यात्रियों के लिए जलपान गृह का निर्माण कार्य 137.38 लाख की लागत से।

2. गोवर्धन ड्रेन के समीप यात्री जनसुविधा केन्द्र तथा विश्राम स्थल का निर्माण कार्य 416.19 लाख की लागत से।

3. बरसाना में श्रीजी (राधारानी) मंदिर मार्ग पर प्रकाश व्यवस्था (सोलर लाईट) का कार्य 26.22 लाख की लागत से।

4. बरसाना स्थित राधारानी मंदिर का विद्युतीकरण का कार्य 631 लाख की लागत से।

5. बरसाना-गोवर्धन रोड पर स्थित लोक निर्माण के गेस्ट हाउस की भूमि पर फैसलिटेशन सेन्टर एवं पार्किंग का निर्माण कार्य की कुल 246.06 लाख रुपये।

मथुरा

1. श्रीकृष्ण जन्मभूमि पर जाने वाले दोनों मार्गों का सौन्दर्यीकरण व सुदृढ़ीकरण कराया गया। इसके अलावा मथुरा जंक्शन के पास पर्यटक सूचना केन्द्र का पुनर्निर्माण कार्य 359.76 लाख की लागत से।

2. जनपद मथुरा में तहसील से वेटरिनरी कॉलेज तक सड़क के दोनों तरफ उद्यानिक विकास व रखरखाव 83.40 लाख से।

3. श्रीकृष्ण जन्मस्थान पर भव्य प्रकाश व्यवस्था का कार्य व लीलामंच एवं लाइट एण्ड साउण्ड शो का निर्माण, मुक्ताकाशीय रंगमंच के पुनर्विकास का कार्य पर कुल लागत 1202.12 लाख रुपये।

4. मथुरा में उत्तर प्रदेश ब्रज तीर्थ विकास परिषद के कार्यालय भवन का निर्माण व विकास कार्य कुल लागत रू. 860.28 लाख रुपये।

गोवर्धन/राधाकुण्ड

1. परिक्रमा मार्ग पर स्ट्रीट फर्नीचर, डस्टबिन की आपूर्ति एवं स्थलीय सूचना हेतु बोर्ड आदि लगाने का कार्य (प्रसाद योजना में) 94.63 लाख की लागत से।

2. मानसी गंगा में फसाड लाईटिंग का कार्य 43.13 लाख की लागत से।

3. गोवर्धन स्थित छोटी एवं बड़ी परिक्रमा मार्ग में कैमरा, आडियो सिस्टम, वाई फाई की स्थापना कार्य 542.26 लाख की लागत से।

4. गोवर्धन स्थित मानसी गंगा में तीर्थ यात्री सुविधा केन्द्र का निर्माण कार्य 201.26 लाख की लागत से।

5. गोवर्धन स्थित लोनिवि अतिथि गृह का जीर्णोद्धार एवं कन्ट्रोल रूम का निर्माण कार्य 205.65 लाख की लागत से।

6. गोवर्धन स्थित भरना खुर्द, सूर्य कुण्ड का जीर्णोद्धार एवं सौन्दर्यीकरण का कार्य 494.24 लाख की लागत से।

7. परिक्रमा में गोवर्धन पर्वत की हरियाली की सुरक्षा एवं जल संरक्षण हेतु पर्वत के चारों ओर फैंसिंग, ग्रिल कार्य 773.16 लाख की लागत से।

8. गोवर्धन परिक्रमा (बड़ी व छोटी) में कैमरा और ओडियो सिस्टम एवं दोनों परिक्रमा में आरपीपी, यूम पाइप बिछाने का कार्य 386.04 लाख की लागत से।

9. गोवर्धन परिक्रमा (बड़ी व छोटी) पर कच्ची परिक्रमा में कर्व स्टोन एवं बोलार्ड लगाने का कार्य 781.30 लाख की लागत से।

10. श्री गिरिराजगोवर्धन परिक्रमामार्ग में सुव्यवस्थित पेयजल व्यवस्था के लिए 3 पम्प हाउस, पाइप लाईन बिछाने एवं 17 टीटीएसपी का निर्माण कार्य 734.15 लाख की लागत से।

11. गोवर्धन बस स्टैण्ड का निर्माण कार्य 306.81 लाख की लागत से।

12. गोवर्धन बस स्टैण्ड के परिसर में मल्टीलेबल कार पार्किंग (प्रासाद योजना के अन्तर्गत) 1506.88 लाख की लागत से।

13. राधाकुण्ड स्थित नारद कुण्ड का सौन्दर्यीकरण कार्य 359.76 लाख की लागत से।

14. कुसुम सरोवर की फसाड लाईटिंग का कार्य (प्रासाद योजना के अन्तर्गत) 482.94 लाख की लागत से।

15. कुसुम सरोवर में लाईट एवं साउण्ड शो का कार्य 526-59 लाख की लागत से।

16. राही पर्यटक आवास गृह, राधाकुण्ड का पुनर्विकास 348.67 लाख की लागत से।

17. चन्द्रसरोवर (महाकवि सूरदास की समाधि) चन्द्रसरोवर में विभिन्न विकास कार्य (प्रासाद योजना) में लागत 432.47 लाख की लागत से।

18. गोवर्धन बाईपास मार्ग से गोवर्धन हेलीपोर्ट (पैंठा) तक मार्ग का नव निर्माण कार्य 486.37 लाख की लागत से।

19. ग्राम गांठोली स्थिति गुलाल कुण्ड का सुदृढ़ीकरण (म.व.वि.प्रा. की अवस्थापना निधि) से 92.12 लाख की लागत से।

नंदगांव

1. नन्द मंदिर पर फसाड लाईटिंग का कार्य 76.08 लाख की लागत से।

2. रंगीली चौक से नन्दबाबा मंदिर तथा वीआईपी पार्किंग से नन्दबाबा मंदिर तक जाने वाली सीढ़ियों का पुनर्निर्माण का कार्य 67.98 लाख की लागत से।

3. रंगीली चौक से नंद मंदिर तक जाने वाले वैकल्पिक सीढ़ियों का पुनर्निर्माण 240.99 लाख लागत से।

4. नन्दगाँव स्थित टेर कदम्ब में बाउण्ड्रीवॉल तथा टॉयलेट ब्लॉक का निर्माण कार्य 95.33 लाख की लागत से।

5. कृष्ण-बलराम कुण्ड (टेर कदम्ब) में वृक्षारोपण, सुरक्षा घेरा का तथा वृक्षारोपण कार्य 17 लाख की लागत से।

6. नन्दगाँव में आशेश्वर महादेव कुण्ड का पुनर्निर्माण एवं सम्पर्क मार्ग का कार्य 235.52 लाख की लागत से

7. नन्दगाँव स्थित वृन्दा कुण्ड का सौन्दर्यीकरण एवं पहुँच मार्ग का कार्य 344 लाख की लागत से।

8. नन्दगाँव स्थित पावन सरोवर का सौन्दर्यीकरण का कार्य 48.28 लाख की लागत से।

upbtvp
उत्तर प्रदेश ब्रज तीर्थ विकास परिषद
सांस्कृतिक धरोहर की पुनर्प्रतिष्ठा

UP Braj Teerth Vikas Parishad has been constituted under the Uttar Pradesh Braj Niyojan Aur Vikas Board (sanshodhan) Adhiniyam 2017 (U.P. Act No. 3 of 2017) for the preparation of a plan for preserving, developing and maintaining the aesthetic quality of Braj heritage in all hues - cultural, ecological and architectural, co-coordinating and monitoring the implementation of such plan and for evolving harmonized policies for integrated tourism development and Heritage conservation and management in the region, giving advice and guidance to any department/local body/authority in the district of Mathura in respect of any plan, project or development proposals which affects or is likely to affect the heritage resource of the Braj Region and for matters connected here with or incidental there to.

मथुरा डॉक पंजीयन संख्या-070/2022-24 पंजीयन संख्या UPHIN 2003/11917

उत्तर प्रदेश ब्रज तीर्थ विकास परिषद

upbtvp

सांस्कृतिक धरोहर की पुनर्प्रतिष्ठा